# इकाई 14 पारिभाषिक शब्दावली : अवधारणा और आयाम

**इकाई की रूपरेखा**


14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 पारिभाषिक शब्दावली : अर्थ और परिभाषा

14.2.1 पारिभाषिक शब्द : व्युत्पत्तिमूलक अर्थ

14.2.2 पारिभाषिक शब्दावली : कुछ परिभाषाएँ

14.2.3 पारिभाषिक शब्दावली के प्रकार

14.3 सामान्य एवं पारिभाषिक शब्द में अंतर

14.3.1 संरचनात्मक स्तर पर समानता–असमानता

14.3.2 अर्थ–संरचना के स्तर पर असमानता

14.4 पारिभाषिक शब्दावली के अभिलक्षण

14.4.1 असामान्यता और परिभाष्यता

14.4.2 विशिष्ट/नियत अर्थ के संवाहक

14.4.3 अप्रतिस्थापना और दुरूहता

14.4.4 विषय–सापेक्षता

14.4.5 अर्थ–रूढ़िता, अर्थ–सूक्ष्मता और अर्थ–भेदकता

14.4.6 कृत्रिम निर्माण, प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व एवं विस्तारशीलता

14.4.7 भाषा की प्रकृति एवं उच्चारण पद्धति के अनुकूल

14.4.8 प्रयोग में एकरूपता से शब्दावली का मानकीकरण संभव

14.4.9 तकनीकी शैली के विकास में सहायक

14.5 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की विकास–प्रक्रिया

14.5.1 सहज विकास–प्रक्रिया

14.5.2 नियोजित विकास–प्रक्रिया

14.5.3 सहज और नियोजित विकास–प्रक्रिया में अंतर

14.6 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की परंपरा

14.6.1 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के आरंभिक प्रयास

14.6.2 19वीं शताब्दी में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण

14.6.3 1900–1950 के दौरान पारिभाषिक शब्दावली निर्माण

14.6.4 स्वतंत्रता के पश्चात शब्दावली निर्माण के प्रयास

14.7 सारांश

14.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

14.9 उपयोगी पुस्तकें

## 14.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ, स्वरूप और प्रकारों से अवगत हो सकेंगे;
- सामान्य एवं पारिभाषिक शब्द में समानता–असमानता के बारे में जान सकेंगे;
- पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न अभिलक्षणों को समझ सकेंगे; और
- शब्दावली निर्माण की नियोजित विकास–प्रक्रिया एवं परंपरा से परिचित हो सकेंगे।

## 14.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आप शब्द का तात्पर्य और शब्दों के स्रोत, प्रकार, आवश्यकता, उपादान, शब्द शक्तियाँ आदि अन्य आयामों के बारे में जान चुके हैं। इस प्रक्रिया में आपको यह स्पष्ट हो चुका होगा कि अनुवाद में शब्द का क्या महत्व है? शब्दों के इन आयामों का बोध हो जाने के पश्चात यह समझना सरल हो जाएगा की पारिभाषिक शब्दावली का क्या अर्थ है।

यह इकाई पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा और उसके प्रमुख आयामों से संबंधित है। इसमें सबसे पहले पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ और स्वरूप को स्पष्ट करते हुए यह बताया गया है कि संरचनात्मकता के स्तर पर सामान्य एवं पारिभाषिक शब्द में कोई भेद नहीं होता है। यह भी बताया गया है कि अर्थ–संरचना के स्तर इनमें किस प्रकार समानता–असमानता पाई जाती है। इस इकाई में पारिभाषिक शब्दावली के विविध प्रकारों के बारे में बताने के साथ–साथ इसके विभिन्न अभिलक्षणों पर भी विस्तार से चर्चा की गई है। इकाई में इस शब्दावली निर्माण की सहज और नियोजित विकास–प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए दोनों में अंतर भी स्पष्ट किया गया है। और, इकाई के अंत में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की परंपरा का संक्षेप में उल्लेख किया गया है।

## 14.2 पारिभाषिक शब्दावली : अर्थ और परिभाषा

भाषा संप्रेषण का सशक्त माध्यम है। मानव अपने भावों–विचारों अथवा संकल्पनाओं को भाषा के द्वारा व्यक्त करता है। मनुष्य, समाज में रहते हुए ही भाषा सीखता है और समाज में ही इसका प्रयोग करता है। वैसे, भाषा संप्रेषण का साध्य न होकर साधन मात्र होती है। भाषा, सार्थक शब्दों का समूह होती है और इसका कार्य अर्थ की प्रतीति कराना है। यह अर्थ–बोध उस भाषा को जानने वालों को होता है। भाषा–विशेष में शब्दों की अधिकता, उतने ही अधिक अर्थ–क्षेत्रों को व्यक्त करने की क्षमता को सिद्ध करती है।

शब्द स्वयं में सामान्य और पारिभाषिक अर्थ को व्यक्त करते हैं। जिन शब्दों में कोई तकनीकी पक्ष समाहित नहीं होता, वे सामान्य शब्द होते हैं। इनके विषय में कुछ भी स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं होती है। इनका यह वैशिष्ट्य कहा जा सकता है कि इन्हें सरलता से पहचाना जा सकता है। सामान्य शब्द, मूलतः मूर्त वस्तुओं, स्थितियों अथवा अवस्थाओं से संबंधित होते हैं और दैनंदिन के सामान्य कार्य–व्यवहार में इन्हें प्रयुक्त

किया जाता है। 'विद्यालय', 'फल', 'बचपन', 'घर', 'उबालना', 'नमक', 'मीठा', 'कलम', 'ठोस', 'पानी', 'पुस्तक', 'बच्चा', 'सूँघना' आदि वस्तुओं, स्थानों, संबंधों या स्थिति आदि के वाचक सामान्य शब्द हैं। लेकिन, पारिभाषिक स्वयं में विशिष्ट अर्थ को व्यक्त करने वाले हैं। आइए, इनकी चर्चा करते हैं।

### 14.2.1 पारिभाषिक शब्द : व्युत्पत्तिमूलक अर्थ

साहित्य–जगत (भले ही वह ज्ञानात्मक साहित्य से संबंधित हो अथवा आनंद के साहित्य से) शब्दों के संदर्भ में प्रयुक्त होने वाला 'पारिभाषिक शब्द' अंग्रेजी भाषा के 'Technical Term' शब्द के समतुल्य व्यवहृत होता है। शब्द 'पारिभाषिक' एक विशेषण है जिसकी रचना 'परिभाषा' शब्द में 'इक' प्रत्यय से हुई है। इस तरह, 'पारिभाषिक' का अर्थ है – परिभाषा संबंधी (अर्थात जिसकी परिभाषा की जा सके अथवा जिसकी परिभाषा देने की आवश्यकता हो)। जहाँ तक 'परिभाषा' शब्द का संबंध है इसकी व्युत्पत्ति 'भाष्' धातु में 'परि' उपसर्ग जोड़कर हुई है। 'भाष्' धातु कथन का और 'परि' उपसर्ग विशिष्टता (अथवा विशेषार्थ) का द्योतक है। इस प्रकार परिभाषा विशिष्ट भाष् अर्थात् किसी पद, शब्द या कथन की पहचान के स्पष्टीकरण से संबंधित है। इस विशिष्ट कथन का संबंध किसी भी विषय अथवा विषय–वस्तु, अर्थ, क्षेत्र अथवा संदर्भ से हो सकता है। इस प्रकार पारिभाषिक शब्द, विशिष्ट विचारों को व्यक्त करने वाला विशिष्ट शब्द हैं। परिभाषा या विशिष्ट संदर्भ से जुड़े पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किसी परिभाषा–युक्त कथन के सूत्र के रूप में किया जाता है। भाषा में ये शब्द विशिष्ट अवधारणाओं के अभिव्यंजक होते हैं और स्वयं में तत्संबंधी व्याख्या समाहित किए हुए होते हैं।

'पारिभाषिक' शब्द के पर्याय के रूप में 'तकनीकी' शब्द भी प्रयुक्त होता है। जैसे, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' (Commission for Scientific and Technical Terminology) के नाम में प्रयुक्त 'तकनीकी' शब्द, अंग्रेजी के 'Technical' शब्द के समतुल्य प्रयुक्त होता है। जबकि आयोग के द्वारा ही निर्मित शब्दकोश 'Comprehensive Glossary of Technical Terms' का हिंदी रूपांतर है – 'बृहत् पारिभाषिक शब्द–संग्रह'। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि 'पारिभाषिक' और 'तकनीकी' शब्द पर्याय हैं।

'तकनीकी' शब्द अंग्रेजी के 'Technical' के ध्वनि–साम्य के आधार पर निर्मित हिंदी पर्याय है, जो 'Technique' से बना है। यह मूल अंग्रेजी शब्द ग्रीक भाषा के 'Technika' से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है – कला अथवा शिल्प का और 'इक' का अर्थ है – इसका (इससे संबद्ध)। इस प्रकार 'टेक्नी' शब्द का अभिप्राय हुआ – कला अथवा शिल्प का अथवा उससे सम्बद्ध। ग्रीक में टेक्टोन (Teckton) का अर्थ है – बढ़ई अथवा निर्माता (builder)। लैटिन में 'टेक्सीयर' (Texere) को 'बुनना' अथवा 'बनाने' अथवा 'निर्माण करने' के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। इस तरह, यह ग्रीक शब्द किसी चीज को बनाने अथवा तैयार करने की कला या शिल्प है। अंग्रेजी के 'Technique' शब्द में भी यही अर्थ उजागर होता है। ये शब्द संसार में प्राकृतिक रूप से उत्पन्न मानव–परिचित वस्तुओं आदि का बोध कराने वाले शब्दों से पृथक होते हैं।

शब्दकोश के अनुसार, 'Technical' शब्द का शाब्दिक अभिप्राय है – 'of a particular art, science, craft or about art.' अर्थात 'विशेष कला का अथवा विज्ञान का अथवा कला के बारे में'। स्पष्ट है कि 'Technical' (तकनीकी) शब्द 'बनाने', 'तैयार करने' के

अर्थ का वहन करता है। इसके इस अर्थ को 'शब्द' (term) के साथ प्रयोग करने पर अर्थात् 'Technical Term' (तकनीकी शब्द) लिखने पर इसमें तात्पर्य निहित हो जाता है कि यह मानव द्वारा निर्मित अथवा अभिकल्पित या अन्वेषित भाव–विचार या फिर वस्तु को उजागर करने वाला शब्द है।

### 14.2.2 'पारिभाषिक शब्द' (Technical Term) : कुछ परिभाषाएँ

पारिभाषिक शब्दों के अर्थ–तत्व के बोध के लिए तत्संबंधी परिभाषा अथवा व्याख्या पर भी समुचित ध्यान दिया जाना अपेक्षित है। रैंडम हाउस ने पारिभाषिक शब्द की परिभाषा इन शब्दों में दी है – 'विशिष्ट विषय जैसे विज्ञान अथवा कला विषय की तकनीकी अभिव्यक्ति के लिए निश्चित अथवा विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त एक शब्द अधिकांशतः कला का शब्द।' {A word or phrase used in definite or precise sense in some particular subject as a science or art a technical impression (more fully term of art).}

चैंबर्स टैक्निकल डिक्शनरी की भूमिका में पारिभाषिक शब्द के संबंध में कहा गया है कि 'यह प्रश्न किया जा सकता है कि पारिभाषिक शब्द क्या है? पारिभाषिक शब्द वह शब्द या अभिव्यक्ति है जो मानव की विशिष्ट गतिविधियों या प्रकृति के किसी विशेष पहलू से संबंधित ज्ञान की शाखा के विद्वान या कुशल व्यक्ति के लिए विशेष महत्व का या मूल्यवान हो।' (What it may be asked is a technical term? It may be defined as a word of expression which has special significance and value to a person learned or dexterous in a branch of knowledge relating to some particular human activity or to some particular aspect of human nature.)

डॉ. रघुवीर ने डॉ. गार्गी गुप्त द्वारा संपादित पुस्तक 'पारिभाषिक शब्दावली की विकास–यात्रा' में पारिभाषिक शब्द को परिभाषित करते हुए लिखा है – 'पारिभाषिक शब्द किसको कहते हैं? जिसकी परिभाषा की गई हो। पारिभाषिक शब्द का अर्थ है जिसकी सीमाएँ बाँध दी गई हों।.....जिन शब्दों की सीमा बाँध दी जाती है वे पारिभाषिक शब्द हो जाते हैं और जिनकी सीमा नहीं बाँधी जाती वे साधारण शब्द होते हैं।' (पृ.19)

पारिभाषिक शब्दावली के संबंध में डॉ. गोपाल शर्मा ने 'अनुवाद कला : कुछ विचार' शीर्षक पुस्तक में प्रकाशित अपने आलेख में लिखा है कि 'पारिभाषिक शब्द वह शब्द है जो किसी विशेष ज्ञान के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होता हो तथा जिसका अर्थ एक परिभाषा द्वारा स्थिर किया गया हो।' (पृ.192) और डॉ. पूरनचंद टंडन ने अपनी पुस्तक 'अनुवाद साधना' इसे परिभाषित करते हुए लिखा है कि 'पारिभाषिक शब्द अर्थपरक (भावपरक) अथवा वैचारिक शब्द (conceptual word) होते हैं अर्थात् वे उपयुक्त संदर्भ में किसी शब्द का अर्थ परिभाषित करते हैं ताकि शब्द की संकल्पना मस्तिष्क में बन जाए।' (पृ.106) वहीं, डॉ. दंगल झाल्टे ने अपनी पुस्तक 'प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग' में इसे परिभाषित करते हुए लिखा है – 'जो शब्द सामान्य व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त न होकर ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विषय एवं संदर्भ के अनुरूप विशिष्ट किंतु निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होता है, उन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं। इसे तकनीकी शब्दावली भी कह सकते हैं।' (पृ.100)

विभिन्न परिभाषाओं से पता चलता है कि पारिभाषिक शब्दों का संबंध सामान्य भाषा–व्यवहार से न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से होता है और प्रत्येक क्षेत्र के लिए संकल्पनाओं को औपचारिक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए अर्थ–सीमा निश्चित रहती है ताकि उन्हें

ठीक–ठीक परिभाषित किया जा सके। इस आधार पर '**उस शब्द को पारिभाषिक शब्द कहा जा सकता है जो अर्थ एवं प्रयोग की दृष्टि से ज्ञान के किसी विशिष्ट क्षेत्र में रूढ़ होकर एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होता है और जो परिभाषा से युक्त हो।**' इस प्रकार, मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रशासन, कृषि, बैंकिंग–बीमा, वाणिज्य–व्यापार आदि सहित ज्ञान–विज्ञान की समस्त शाखाओं–प्रशाखाओं से संबंधी इस प्रकार की शब्दों को 'पारिभाषिक शब्दावली' कहा जाता है। वैसे, विज्ञान–प्रौद्योगिकी की विभिन्न शाखाओं–प्रशाखाओं से संबंधित शब्दावली को संक्षेप में 'वैज्ञानिक शब्दावली' भी कह दिया जाता है, जिसका अर्थ वस्तुतः 'पारिभाषिक शब्दावली' ही होता है।

पारिभाषिक शब्दावली संबंधी विचारों से यह स्पष्ट है कि सीमित अर्थबोध कराने वाले इन शब्दों का संबंध विशिष्ट विधा–विशेष, विज्ञान या कला से जुड़े विशिष्ट विषय से होता है और उनमें ये विशिष्ट अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे वाणिज्य–व्यापार, बैंक, कार्यालय, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि से संबंधित क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाले परिभाषेय शब्द। ये असामान्य शब्द होते हैं। इनका प्रयोग सामान्य व्यवहार में न होकर केवल विषय–विशेष में ही निश्चित अर्थ में किया जाता है। उदाहरण के लिए, 'अनुभाग', 'प्रभाग', 'अधिसूचना', 'कार्यालय आदेश', 'निविदा', 'संविदा', 'विज्ञप्ति' आदि शब्द कार्यालयी भाषा में प्रयुक्त होते हैं। इसी प्रकार 'संज्ञा', 'सर्वनाम', 'विशेषण', 'क्रिया–विशेषण', 'स्वर', 'व्यंजन', 'स्वनिम', 'रूपिम' आदि शब्द भाषाविज्ञान के क्षेत्र में व्यवहृत होते हैं।

### 14.2.3 पारिभाषिक शब्दावली के प्रकार

शब्द, भाषा की स्वतंत्र–सार्थक एवं अत्यधिक महत्वपूर्ण इकाई है। जीवन–व्यवहार के जितने अधिक क्षेत्रों में भाषा का प्रयोग होता है, उन्हीं के अनुकूल शब्दावली भी विकसित होती चलती है। शब्दों की रचना–प्रक्रिया के आधार पर सामान्य एवं पारिभाषिक शब्दावली में कोई अंतर नहीं होता है, किंतु प्रयोग की भिन्नता शब्दों में भिन्नता स्थापित करती है। इसलिए विभिन्न विद्वानों ने उन्हें प्रयोग के आधार पर भिन्न–भिन्न वर्गों में विभाजित किया है।

सामाजिक विज्ञानों की शब्दावली को अपने शोध एवं समीक्षा का विषय बनाकर हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में पहला पीएच.डी. अध्ययन करने वाले डॉ. गोपाल शर्मा ने अपने शोध–प्रबंध में शब्द और पारिभाषिक शब्द पर विचार करते हुए लिखा है कि 'पारिभाषिक शब्द तीन प्रकार के होते हैं : (1) पूर्ण पारिभाषिक, (2) मध्यस्थ; तथा (3) सामान्य।' (पृ. 101) डॉ. विनोद गोदरे ने अपनी कृति 'प्रयोजनमूलक हिंदी' में पारिभाषिक शब्दों के वर्गीकरण के निश्चित आधार के अभाव को रेखांकित किया है और माना है कि 'वर्गीकरण आधारों तथा वर्गीकरण के भेद–प्रभेदों को अधिक विस्तारों की उलझनों से बचने के लिए पारिभाषिक शब्दावली को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है : (1) पूर्ण पारिभाषिक शब्दावली, जो विभिन्न अनुसंधानों में ज्ञान, विज्ञान शाखाओं में प्रयुक्त शब्दावली का स्थूलवाचक शब्दावली है। (2) अर्धपारिभाषिक शब्दावली जिसमें सामान्य शब्द संदर्भ विशेष में पारिभाषिक शब्द बन जाते हैं। चूँकि सामान्यतः ये पारिभाषिक शब्द नहीं होते किंतु कभी–कभार ही संदर्भ की आवश्यकता से पारिभाषिक बनते हैं अतः इन्हें पारिभाषिकोन्मुख सामान्य शब्द कहा जा सकता है। इन्हें अर्धपारिभाषिक शब्द भी कहा जा सकता है।' (पृ.160)

पारिभाषिक शब्दावली के बारे में उनके प्रयोग अथवा व्यवहार के इन्हें (1) अर्ध–पारिभाषिक शब्द; एवं (2) पारिभाषिक शब्द में वर्गीकृत करना उपयुक्त होता है।

**पारिभाषिक शब्द** के अर्थ और स्वरूप पर इस इकाई में पहले ही विचार किया जा चुका है। आपको यह स्पष्ट हो चुका है कि इनका संबंध विधा–विशेष, विज्ञान अथवा कला से संबंधित विशिष्ट विषय से होता है और ये उनमें विशिष्ट अर्थों में प्रयुक्त होते हैं; ये असामान्य शब्द होते हैं और इनका प्रयोग सामान्य व्यवहार में न होकर के केवल विषय–विशेष में ही निश्चित अर्थ में किया जाता है। इसलिए अब हम यहाँ पर केवल 'अर्ध–पारिभाषिक शब्द' के बारे में जानेंगे।

**अर्ध–पारिभाषिक शब्द** : अर्ध–पारिभाषिक शब्द, सामान्य एवं पारिभाषिक शब्दों के बीच की स्थिति में आने वाले शब्द होते हैं। इनका सामान्य जीवन–व्यवहार में तो इस्तेमाल होता ही है, किसी भी विशिष्ट ज्ञान–क्षेत्र के संदर्भ में भी इस्तेमाल किया जाता है। इन शब्दों का यह वैशिष्ट्य होता है कि इनका पारिभाषिक अर्थ व्याख्या, लोक–प्रयोग, अर्थ–विस्तार, अर्थादेश, अर्थ–संकोच द्वारा सिद्ध होता है। लोक–व्यवहार एवं शास्त्र/विज्ञान–विशेष में प्रयुक्त होने के स्तर पर शब्द के इस रूप में कोई परिवर्तन नहीं आता है, ये केवल नया अर्थ लिए हुए होते हैं। 'आवेश', 'भिन्न', 'दावा', 'संधि', 'रस', 'पुष्प', 'आदेश', 'रेखा', 'ऋण', 'हस्ताक्षर', 'कार्य', 'दंड' 'सूजन', 'वृक्ष', 'वेदना', 'स्वीकृत', 'शक्ति', 'प्रणाली' आदि ऐसे ही शब्द हैं। इस प्रकार के शब्द अर्थांतरण गुण लिए हुए होते हैं अर्थात् सामान्य अर्थ में तो इन्हें प्रयुक्त किया ही जाता है यदि इन्हें स्पष्ट किया जाए तो इनमें ज्ञान–विशेष के क्षेत्र–विशेष संबंधी वैज्ञानिक–तकनीकी वैशिष्ट्य भी नजर आएगा।

## 14.3 सामान्य शब्द एवं पारिभाषिक शब्द में समानता–असमानता

'पारिभाषिक शब्द' कहने मात्र से इसका 'सामान्य शब्द' से पार्थक्य स्थापित हो जाता है। यहाँ सर्वप्रथम यह विचारणीय हो जाता है कि सामान्य शब्द एवं पारिभाषिक शब्द में समानता–असमानता का आधार क्या है।

होता यह है कि कभी–कभी एक ही शब्द अलग–अलग संदर्भों में पारिभाषिक रूप भी ग्रहण कर सकता है और सामान्य भी। उदाहरण के लिए, यदि बोलचाल में यह कहा जाए कि 'मुझे उसकी बात पर आपत्ति है' तो यहाँ 'आपत्ति' शब्द सामान्य प्रतीत होता है। किंतु जब इसी शब्द को 'विधि' (Law) के संदर्भ में प्रयुक्त करते हुए कहें कि 'प्रतिवादी की आपत्ति' तो वहाँ 'आपत्ति' एक पारिभाषिक शब्द है। इस प्रकार, यदि शब्द को विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त किया जाए तो वह पारिभाषिक होता है अन्यथा सामान्य। अरस्तू ने अपने 'काव्यशास्त्र' में भी कहा है कि एक ही शब्द अलग–अलग संदर्भों–प्रकरणों में पारिभाषिक भी हो सकता है और सामान्य भी। सामान्य शब्द आम भाषा में परंपरागत अर्थ में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं जबकि पारिभाषिक शब्द ज्ञान–विज्ञान अथवा शास्त्र में विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। वैसे, सामान्य एवं पारिभाषिक शब्दों के बीच समानता और असमानता को (1) शब्दों की संरचना; और (2) अर्थ के आयाम से रेखांकित किया जा सकता है।

### 14.3.1 संरचनात्मक स्तर पर समानता–असमानता

शब्द की संरचना के स्तर पर देखें तो यह आयाम शब्द–निर्माण की विधि से संबंधित है, शब्द–रचना से संबद्ध है। शब्द–निर्माण भाषिक नियमों के अनुसार होता है

और व्याकरण पर आधारित होता है। यह व्याकरण सामान्य और पारिभाषिक शब्दों के लिए समान होता है। धातु, उपसर्ग और प्रत्यय के मेल से शब्दों की रचना की जाती है। सामान्य एवं पारिभाषिक शब्दों का निर्माण इन्हीं तीनों उपादानों से होता है। धातु के साथ उपसर्ग–प्रत्यय अथवा शब्द जोड़कर शब्दों की व्युत्पत्ति की जाती है। उपसर्ग–प्रत्यय के अतिरिक्त समास भी शब्द–रचना का तरीका है। इनके माध्यम से शब्द–निर्माण की प्रक्रिया में संधि की सहायता भी ली जा सकती है। भाषा में इनके विशिष्ट नियम होते हैं, जिनसे शब्दों की संरचना बनती है। 'विश्वास', 'अविश्वास', 'विश्वसनीय', 'विश्वनीयता'; 'सुंदर', 'असुंदर', 'सुंदरता'; 'कुशल', 'अकुशल', 'सकुशल', 'कुशलता' आदि शब्दों की रचना धातुओं में उपसर्ग–प्रत्यय लगने से हुई है। इसी भाँति धातुओं के आगे–पीछे उपसर्ग–प्रत्यय लगाकर पारिभाषिक शब्दों का भी निर्माण किया जाता है क्योंकि पारिभाषिक शब्दों का अपना कोई अलग से व्याकरण नहीं होता है। 'विधि', 'विधिक', 'विधिवेता', 'विधिवत', 'वैध', 'अवैध', 'विधिहीन', 'विधान', 'विधायी', 'विधायक', 'विधेयक' आदि पारिभाषिक शब्दों की रचना भी संस्कृत की धातुओं में उपसर्ग–प्रत्यय लगाकर हुई है। स्पष्ट है कि शब्दों के संरचनात्मक स्तर पर सामान्य शब्द एवं पारिभाषिक शब्द में कोई अंतर नहीं है।

### 14.3.2 अर्थ–संरचना के स्तर पर असमानता

सामान्य एवं पारिभाषिक शब्दों के बीच मूल अंतर, वस्तुतः अर्थ–संरचना के स्तर पर ही होता है। भाषा में शब्द का अर्थ अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना शक्ति से संपन्न होता है। व्यक्ति प्रयोजन एवं दृष्टिकोण के अनुरूप अपनी भाषा में शब्द को इन अर्थों के संदर्भ में प्रयुक्त कर सकता है। विशेष तौर पर साहित्य में शब्दों का लाक्षणिक प्रयोग उसे वैशिष्ट्य प्रदान करता है। जबकि पारिभाषिक शब्द में यह गुण होता है कि विषय–विशेष के संदर्भ में अभिधार्थ या एक ही अर्थ देता है, किसी अन्य स्थल पर हम उसका वही अर्थ ग्रहण नहीं कर पाते। साहित्यिक भाषा में 'आँसुओं की नदी बहाना' लाक्षणिक अर्थ–व्यंजक है क्योंकि कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसकी आँखें आँसुओं की नदियाँ बहा सके। इस तरह देखा जाए तो यहाँ मूल अर्थ में अर्थ का विस्तार किया गया है। जबकि ज्ञान के संदर्भ में 'नदी' शब्द प्रयुक्त होने पर उसका मूल अर्थ स्थिर रूप में नजर आता है और उसमें वस्तुनिष्ठता होती है। पारिभाषिक शब्द विषय–सापेक्ष होते हैं, उनके द्वारा व्यंजित अर्थ में निश्चितता एवं सूक्ष्मता होती है। शब्दावली की इस प्रकार की विशिष्टता उन्हें अर्थ के स्तर पर सामान्य शब्द से पृथक पहचान देती है।

पारिभाषिक (तकनीकी) शब्द किसी व्यापार, प्रक्रिया अथवा विशिष्ट संकल्पना के अर्थ के अभिव्यंजक भी हो सकते हैं। जैसे, विज्ञान के गणित विषय में 'दशमलव', 'बिंदु', 'समीकरण' आदि या फिर भाषाविज्ञान में 'ध्वनि', 'स्वन', 'स्वनिम' और 'रूपिम' आदि शब्दों को देखा जा सकता है। इसी प्रकार, दर्शनशास्त्र और आध्यात्मिक संदर्भों में 'माया', 'जगत', 'आत्मा', 'मोक्ष', 'प्राण', 'स्वर्ग', 'नरक', 'अजर–अमर' आदि शब्दों को देखा जा सकता है। यह स्थिति ठोस वस्तुओं आदि के बोधक पारिभाषिक शब्दों की भी है। उदाहरण के लिए, रसायन विज्ञान में 'कैल्शियम', 'नाइट्रोजन', 'सोडियम', 'कार्बन' आदि; वनस्पति विज्ञान में 'ज़ायलम, 'फ्लोयम़' आदि; प्राणिविज्ञान में 'कोशिका', 'धमनी', 'जीवद्रव्य' आदि पारिभाषिक शब्दों की है।

## 14.4 पारिभाषिक शब्दावली के अभिलक्षण

पारिभाषिक शब्दों के अर्थ–तत्व को स्पष्ट करने के लिए जहाँ उसकी परिभाषा अथवा व्याख्या पर समुचित ध्यान दिया जाना अपेक्षित है वहीं इनके अचूक अथवा सटीक प्रयोग करने के लिए उनकी प्रकृति–अभिलक्षणों के बारे में जानना–समझना आवश्यक है। समेकित रूप में पारिभाषिक शब्दावली के विशिष्ट अभिलक्षण इस प्रकार से हैं :

### 14.4.1 असामान्यता और परिभाष्यता

**'असामान्यता'** पारिभाषिक शब्दावली का विशिष्ट अभिलक्षण है। इसका अर्थ है – पारिभाषिक शब्दों से संबद्ध भाव–विचार अथवा परिकल्पना आम तौर पर व्यवहार में प्रयुक्त नहीं होती। इसलिए पारिभाषिक शब्द दैनिक जीवन से काफी दूर होते हैं। दैनंदिन व्यवहार की भाषा के लिए पारिभाषिक शब्द असामान्य होते हैं। उदाहरण के तौर पर 'ईडा', 'पिंगला', 'बक–अंड न्याय', 'अधिसूचना', 'प्रतिभू', 'कर्षण', 'नाभिकीय' आदि पारिभाषिक शब्द ऐसे हैं जो दैनंदिन व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त नहीं होते हैं।

**'परिभाष्यता',** पारिभाषिक शब्दों का प्रमुख अभिलक्षण है। अर्थात पारिभाषिक शब्द परिभाषित होते हैं, उन्हें अधिकांशतः परिभाषा दिए बिना समझा नहीं जा सकता। पारिभाषिक शब्दों को उनकी संकल्पना के अनुरूप परिभाषा देते हुए अथवा संकल्पना की व्याख्या करते हुए समझा–समझाया जाता है। जैसे, 'ताप', 'गुणांक', 'ओम', 'वोल्ट', 'सॉफ्टवेयर', 'घनत्व', 'गुण–सूत्र' आदि पारिभाषिक शब्द देखे जो सकते हैं, जो परिभाष्य होते हैं।

### 14.4.2 विशिष्ट/नियत अर्थ के संवाहक

किसी भी भाषा के शब्द विशिष्ट अर्थ को संवहण किए हुए होते हैं। ज्ञान–विशेष के संदर्भ में ये 'एक संकल्पना अथवा अर्थ एक शब्द का सिद्धांत' पर आधारित होते हैं अर्थात् पारिभाषिक शब्द एक ही पारिभाषिक अर्थ को व्यक्त करता है। और यह अर्थ विषय–क्षेत्र विशेष के संदर्भ में सुनिश्चित होता है। इनके पर्यायवाची नहीं होते हैं। उल्लेखनीय है कि शब्द अपने सुनिश्चित अर्थ की सीमा का अतिक्रमण नहीं कर सकते। जैसे, 'पद' पारिभाषिक शब्द को लिया जा सकता है जो प्रशासन के क्षेत्र में ओहदा या कार्यालय में व्यक्ति के स्तर (post) के लिए, काव्य के क्षेत्र में पद्य (verse) के लिए, समाजशास्त्र के क्षेत्र में सामाजिक प्रस्थिति (status) और व्याकरण में शब्दरूप (word) के लिए प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार, अगर हम अंग्रेजी के 'charge' शब्द को देखें तो वह क्षेत्र की भिन्नता के आधार पर भिन्न–भिन्न अर्थ की अभिव्यंजना करने वाला शब्द सिद्ध होता है। प्रशासन के क्षेत्र में वह 'कार्यभार' का सूचक है तो विज्ञान में 'आवेश' का, लेखा–विधि में 'व्यय' अथवा 'खर्च' का, वाणिज्य में 'उधार' का, विधि में 'आरोप' का और आम बोलचाल की सामान्य भाषा में 'दायित्व' अथवा 'जिम्मेदारी' के अर्थ की व्यंजना करता है।

### 14.4.3 अप्रतिस्थापना और दुरूहता

**'अप्रतिस्थापना'** का अर्थ है – पर्याय द्वारा अपूरणीयता। अर्थात् किसी ज्ञान–क्षेत्र विशेष के पारिभाषिक शब्द के लिए एक ही निश्चित पर्याय रखा जा सकता है, कोई भी दूसरा पर्याय प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। इसका यह अर्थ है कि विशिष्ट ज्ञान–क्षेत्र की संकल्पना–विशेष के लिए प्रयुक्त होने वाले विशिष्ट पारिभाषिक शब्द का स्थान कोई अन्य

शब्द नहीं ले सकता। जैसे प्रशासनिक क्षेत्र में 'issue' (जारी), विधि क्षेत्र में 'Proclamation' (उद्घोषणा)', 'Notification' (नोटिफिकेशन), अंतरिक्ष–क्षेत्र में 'INSAT' (इनसेट), 'Satelite (सेटेलाइट) आदि। इसी भाँति विज्ञान आदि के क्षेत्र में प्रयुक्त गुण–सूत्र, समीकरण, प्रतीक–चिह्न, द्विपदनाम, यौगिक नाम आदि के पर्याय पारिभाषिक शब्दों को व्यवहार में नहीं लाया जा सकता।

कुछ पारिभाषिक शब्दों में **'दुरूहता'** परिव्याप्त होती है, उनका आशय गूढ़ होता है। दुरूहता का तात्पर्य यह है कि पारिभाषिक शब्दावली में ऐसा आशय छिपा रहता है जो शब्द के विश्लेषण से स्पष्ट नहीं हो पाता, उसे जानने के बावजूद समझा नहीं जा पाता। ऐसे शब्द को परंपरा एवं प्रयोग द्वारा समझा जा सकता है। काव्यशास्त्र का 'चित्र–तुरंग न्याय', नीतिशास्त्र का 'बक–अंड न्याय' और दर्शनशास्त्र के 'अद्वैत', 'कुंडलिनी', 'माया' एवं 'ब्रह्म' आदि पारिभाषिक शब्दों के आशय में गूढ़ता के कारण उनमें दुरूहता व्याप्त रहती है।

### 14.4.4 विषय–सापेक्षता

प्रत्येक विषय के विकास के लिए उसके अनुकूल ऐसी शब्दावली के विकास की जरूरत पड़ती है जिसमें विचारों–भावों को पूरी क्षमता के साथ अभिव्यक्त किया जा सके। इस कारण प्रत्येक तकनीकी शब्द किसी न किसी विषय–क्षेत्र से संबद्ध होता है और उसी से ही अपना तकनीकी अर्थ एवं परिभाषा प्राप्त करता है। प्रत्येक तकनीकी/पारिभाषिक शब्द में कुछ निश्चित भाव–संकल्पनाएँ एवं अर्थ निहित होता है। वैसे यह संभव है कि किसी एक विषय का पारिभाषिक शब्द दूसरे विषय–क्षेत्र में भिन्न तकनीकी अर्थ को अभिव्यक्त करे। किंतु यह संभव नहीं है कि एक ही विषय–क्षेत्र में एक ही तकनीकी शब्द दो भिन्न–भिन्न अर्थों में प्रयुक्त हों। इनका अर्थ, विषय–विशेष के संदर्भ में सुनिश्चित होता है और वह उसी अर्थ में व्यवहृत होता है। जैसे, बैंकिंग क्षेत्र में 'रेखित चेक', 'ओवरड्राफ्ट', 'मियादी जमा', 'बचत खाता', 'चालू खाता' आदि शब्दों के अभीष्ट अर्थ बैंकिंग व्यवहार क्षेत्र में स्पष्ट होते हैं। 'रेखित चेक' (cross cheque) शब्द सामान्य रूप से इस अर्थ की व्यंजना करता है कि 'एक ऐसा चेक जिस पर रेखा खींची गई हो'। जबकि बैंकिंग व्यवहार–क्षेत्र में इसका पारिभाषिक अर्थ है – एक ऐसा चेक जिसके ऊपर बायीं ओर दो समानांतर रेखाएँ खिंची हों और उसमें उल्लिखित राशि को केवल उसी व्यक्ति के खाते में अंतरित किया जाता है जिसके नाम पर चेक कटा हो, किसी अन्य व्यक्ति को नहीं।

पारिभाषिक शब्दों को समझने के लिए विषय–विशेष का आधारभूत ज्ञान एवं जानकारी आवश्यक होती है। जो व्यक्ति विषय का जानकार है, जिसने विषय का अध्ययन किया हो और उससे संबंधित कार्यकलाप में संलग्न है उसके लिए विषय–विशेष की शब्दावली का प्रयोग सहज है। इस जानकारी के अभाव में आम आदमी विषय को समझ नहीं सकता। 'computer', 'programme', 'virus', 'software', 'floppy', 'hard disk', 'pen drive', 'data cable' आदि शब्द तकनीकी रूप लिए हुए हैं और इन शब्दों को कंप्यूटर विज्ञान के संदर्भ में ही समझा जा सकता है।

### 14.4.5 अर्थ–रूढ़िता, अर्थ–सूक्ष्मता और अर्थ–भेदकता

**अर्थ–रूढ़िता** : पारिभाषिक शब्द जहाँ विशिष्ट अर्थ के संवाहक होते हैं, वहीं वे उस विशिष्ट अर्थ में रूढ़ भी होते हैं। यदि पारिभाषिक शब्द अथवा उसके किसी अंश का

प्रतिस्थापन करते हुए उसके स्थान पर पर्याय को व्यवहार में लाया जाए तो वह अनुवाद को विकृत कर देता है। जैसे, भौतिकी में 'sound' के लिए हिंदी में 'ध्वनि' शब्द प्रयुक्त होता है। किंतु इसके स्थान पर उसके समतुल्य पर्याय 'स्वन' शब्द को इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। कभी–कभी पारिभाषिक शब्द से जो सामान्य अर्थ (वाच्यार्थ) प्रकट होता है, वह उसके तकनीकी अर्थ से भिन्न हो सकता है। जैसे, कंप्यूटर प्रौद्योगिकी में 'mouse' उपकरण इस्तेमाल होता है। यह चूहे की भाँति छोटा–सा उपकरण है और इसे मेज पर रखी एक प्लेट पर इधर–उधर घुमाकर इसका वांछित प्रयोग किया जाता है। जबकि इस पारिभाषिक शब्द का अंग्रेजी में शास्त्रीय (मूल) अर्थ यह नहीं है। शास्त्रीय अर्थ से अनभिज्ञ अनुवादक इसे 'चूहा' अनूदित कर सकता है। इसी प्रकार का एक अन्य उदाहरण है – 'labour pain' शब्द। अनुवादक इसका सामान्य अर्थ लेते हुए इसे 'श्रमजन्य पीड़ा' अनूदित कर सकता है जबकि चिकित्साशास्त्र में यह शब्द 'प्रसव पीड़ा' के लिए रूढ़ है।

**अर्थ–सूक्ष्मता** : सामान्य शब्द की अर्थ–व्याप्ति अधिक व्यापक होती है। इनमें मुख्य अर्थ के अतिरिक्त कई गौण अर्थ भी निहित होते हैं और इनका लाक्षणिक प्रयोग भी संभव है। जबकि पारिभाषिक शब्दों का अर्थ अत्यंत सूक्ष्म, गहन एवं विस्तृत होता है। वह न केवल किसी विषय–क्षेत्र विशेष के संदर्भ में अर्थ को व्यक्त करता है अपितु वह उस अर्थ–विशेष के भी सूक्ष्म अंश का अर्थ उद्घाटित करता है। जैसे, सामान्य शब्द 'किरण' का लाक्षणिक प्रयोग करते हुए उसे 'आशा की किरणें' के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है जबकि विज्ञान शब्दावली में 'ray' के लिए 'किरण', 'radiation' के लिए 'विकिरण' हो जाता है और 'beam' के लिए 'किरण पुंज' है। इस तरह के सूक्ष्म अंतर को दर्शाने वाला अन्य पारिभाषिक शब्द है – 'चाल' (speed) और 'वेग' (velocity) या फिर 'ताप' (heat) और 'तापमान' (temperature)।

पारिभाषिक शब्दावली की अर्थ–सूक्ष्मता का एक पक्ष यह भी है कि वैज्ञानिक–प्रौद्योगिकी सोच एवं संकल्पना में परिमार्जन के साथ–साथ जो नई मौलिक उद्भावनाएँ सामने आती जाती हैं वैसे–वैसे पारिभाषिक शब्द का अर्थ भी सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होता चलता है। जैसे अंग्रेजी भाषा के सामान्य शब्द 'Programme' और 'memory' शब्द, कंप्यूटर विज्ञान में विशिष्ट एवं सीमित अर्थ के अभिव्यंजक हो चुके हैं।

**अर्थ–भेदकता** : पारिभाषिक शब्दों से अर्थ में भेदकता आती है। इनसे न केवल एक अर्थ की अभिव्यंजना होती है, बल्कि उसके भी सूक्ष्म अंश के अर्थ–बोध के प्रकटन से अर्थ में सूक्ष्मता आती है। ये शब्द भले ही सजातीय प्रतीत हों किंतु इन भेदोपभेदों में सूक्ष्म अर्थ–भेद विद्यमान होता है। ज्ञान–विज्ञान के संदर्भ में इन भेदोपभेदों का अपना महत्व होता है। अंग्रेजी के 'epidemic' पारिभाषिक शब्द के लिए 'महामारी', 'pandemic' के लिए 'विश्वमारी' और 'endemic' के लिए 'लघुमारी' शब्द सूक्ष्म अर्थ–भेद के व्यंजक शब्द हैं। इसी तरह से अर्थशास्त्र के 'development', 'growth' और 'evolution' शब्दों को देखा जा सकता है, जिनके सूक्ष्म अर्थ को प्रकट करने के लिए क्रमशः 'विकास', 'संवृद्धि' एवं 'उद्विकास' शब्द हैं। अनुवादक को इस प्रकार के अर्थ–भेदों को अनूदित पाठ में बनाए रखना महत्वपूर्ण होता है। इसके लिए उसे सटीक पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करते हुए इनके अर्थ–भेद को बनाए रखना होता है। जैसे, 'salary' और 'income' शब्द सामान्य संदर्भ में एक ही अर्थ के व्यंजक हैं, जबकि आयकर के संदर्भ में ये दोनों पृथक–पृथक पारिभाषिक अवधारणाएँ (अर्थात 'वेतन' और 'आय') हैं।

### 14.4.6 कृत्रिम निर्माण, प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व एवं विस्तारशीलता

अधिकांश पारिभाषिक शब्दों का कृत्रिम ढंग से निर्माण किया जाता है। ज्ञान–विज्ञान के विविध क्षेत्रों में नितनूतन खोजों, अधुनातन विकास एवं नवीन वस्तुओं के निर्माण के कारण उनकी अभिव्यक्ति, नवीन विषय–वस्तु निरूपण या नई संकल्पनाओं को स्पष्ट करने के लिए उनके अनुरूप नए शब्दों का निर्माण आवश्यक हो जाता है। यह शब्द–निर्माण कृत्रिम होता है। इसके अतिरिक्त, कभी–कभी आविष्कारों, आविष्कारकर्ता वैज्ञानिकों, सिद्धांत–प्रतिपादकों, तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा स्वयं अथवा प्रतीकों के आधार पर भी कृत्रिम पारिभाषिक शब्दों को गढ़ लिया जाता है। 'जूल', 'म्यू', 'लेम्बडा', 'पाई', 'डार्विनिज़्म' (डार्विनवाद), 'गांधीज़्म' (गांधीवाद), 'मार्क्सिज़्म' (मार्क्सवाद), 'फासिज़्म' (फासीवाद) आदि शब्द ऐसे ही हैं जिन्हें खोजकर्ता, सिद्धांत–प्रतिपादक अथवा प्रतीकों के आधार पर निर्मित किया गया है।

**विस्तारशीलता** : विस्तारशीलता, पारिभाषिक शब्दावली का विशिष्ट अभिलक्षण है, जिसका अर्थ है – पारिभाषिक शब्दावली में विस्तार की संभावना हो अर्थात् वह शब्द ऐसा हो जिससे संबंधित विषय, क्षेत्र, सिद्धांत अथवा अवधारणा के अन्य पक्षों को प्रकट करने वाले अन्य अभीष्ट पारिभाषिक शब्द भी गढ़े जा सकने की संभावना रहे। अंग्रेजी भाषा इस गुण से युक्त है जबकि हिंदी भाषा में इस गुण के अभाव का तथाकथित आक्षेप लगा दिया जाता है। जबकि वास्तविकता यह है कि हिंदी भाषा शब्दावली–विस्तार की संभावना के गुण से संपन्न है। उदाहरण के तौर पर पारिभाषिक शब्द 'विधि' शब्द को देखा जा सकता है जिसमें उपसर्ग–प्रत्यय आदि जोड़कर 'विधि', 'विधिक', 'विधिवेता', 'विधिवत', 'वैध', 'अवैध', 'विधिहीन', 'विधान', 'विधायी', 'विधायक', 'विधेयक' आदि पारिभाषिक शब्द निर्मित किए गए हैं। महान कोशकार डॉ. रघुवीर ने हिंदी की इस विस्तारशीलता को पहचाना एवं कोश–निर्माण कार्य में इसका विशेष ध्यान रखा। उन्होंने अंग्रेजी के 'Television', 'Telephone', 'Teleprinter', 'Telescope' आदि शब्दों के मूल में 'Tele' शब्द के लिए हिंदी में 'दूर' शब्द का निर्धारण किया और इसके आधार पर क्रमशः 'दूरदर्शन', 'दूरभाष', 'दूरमुद्रक', 'दूरदर्शक' आदि शब्द गढ़े।

### 14.4.7 भाषा की प्रकृति एवं उच्चारण पद्धति के अनुकूल

पारिभाषिक शब्दों का संरचनात्मक स्वरूप भाषा की प्रकृति एवं उच्चारण पद्धति के अनुकूल होना चाहिए ताकि उनके व्यवहार में कोई कठिनाई न हो। पारिभाषिक शब्द को जब उच्चरित किया जाए तो उससे उसमें निहित संकल्पना का बोध होने की क्षमता से युक्त होना चाहिए। पारिभाषिक शब्दों के बारे में देखा यह गया है कि जो शब्द हिंदी भाषा में चल पड़े हैं वे उसकी प्रकृति के अथवा उच्चारण–सुकरता के अनुकूल ढल गए हैं। उदाहरण के लिए, 'Ministry' शब्द का समतुल्य हिंदी पारिभाषिक शब्द 'मंत्रालय' है जबकि भाषा संबंधी शुद्धता की दृष्टि से यह 'मंत्र्यालय' (अर्थात मंत्री+आलय) होना चाहिए था।

वैसे, जो पारिभाषिक शब्द बहुत अधिक प्रयोग में नहीं आए हैं या फिर जिनकी आम तौर पर जरूरत नहीं पड़ती है उन्हें अपनी भाषा की प्रकृति के अनुकूल ढाल लेना सरल होता है। उदाहरण के लिए, 'computerisation' के लिए 'कंप्यूटरीकरण' शब्द–रचना के स्तर पर और 'tragedy' के लिए 'त्रासदी', 'comedy' के लिए 'कामदी' या फिर 'technique' के लिए 'तकनीक' शब्द निर्माण उच्चारण के स्तर पर अनुकूलन का प्रमाण

है। अनुकूलन की इस प्रवृत्ति को केवल हिंदी के संदर्भ में ही नहीं, अन्य भाषाओं के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी भाषा ने हिंदी के 'संत', और 'खाट' आदि शब्दों का भी उल्लेख किया जा सकता है। 'संत' शब्द के लिए अंग्रेजी में 'saint' शब्द का प्रयोग किया जाता है तो 'खाट' के लिए 'cot'। वैसे पारिभाषिक शब्द की सहजता–सरलता एवं शुद्धता में से प्राथमिकता शुद्धता को ही दी जानी चाहिए।

### 14.4.8 प्रयोग में एकरूपता से शब्दावली का मानकीकरण संभव

प्रयोग में एकरूपता से पारिभाषिक शब्दावली का मानकीकरण संभव हो पाता है। एकरूपता और मानकीकरण, पारिभाषिक शब्दावली की अनिवार्यता है। किसी भी भाषा में अनुवाद के माध्यम से विकसित होने वाली पारिभाषिक शब्दावली के संदर्भ में इस एकरूपता की नितांत आवश्यकता होती है क्योंकि स्रोत भाषा के किसी तकनीकी शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में अलग–अलग तकनीकी पर्यायों के प्रयोग से पाठकों को अर्थ–बोध में भ्रम, अनुवाद में अव्यवस्था और शब्दावली के क्षेत्र में अराजकता की स्थिति बन जाएगी।

शब्दावली के क्षेत्र की इसी अराजकता के कारण, हिंदी भाषा में कई अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों के लिए दो अथवा उससे अधिक हिंदी पर्याय प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए, विज्ञान संबंधी 'generation' के लिए 'प्रजनन', 'उत्पादन' और 'उत्पत्ति' शब्द। इसी प्रकार, भौतिकी में 'pressure' के लिए 'दबाव' या 'बल' और 'heat' के लिए 'गर्मी' अथवा 'उष्णता' पर्यायों की उपलब्धता। यह स्थिति केवल विज्ञान विषयक शब्दावली में नहीं बनी हुई है अपितु मानविकी–सामाजिक विज्ञान विषयों एवं प्रशासन के क्षेत्र आदि में भी है। जैसे प्रशासन के क्षेत्र में 'Manager' के लिए 'प्रबंधक' अथवा 'व्यवस्थापक', 'Collector' के लिए 'जिलाधीश', 'जिलाधिकारी', 'कलक्टर', 'संग्राहक', 'समाहर्ता' और 'Sub-Divisional Officer' के लिए 'अनुमंडलाधिकारी', 'उपमंडलाधिकारी', 'परगना अधिकारी', 'उपप्रभागीय अधिकारी' पर्यायों की उपलब्धता अथवा चलन। इस प्रकार पर्याय प्रयोग से शब्दावली को मानक रूप देने की प्रक्रिया बाधित होती है।

दूसरी ओर, यह भी सही है कि कुछ पारिभाषिक शब्दों के संदर्भ में विपरीत स्थिति नजर आती है। यानी कुछ तकनीकी पर्यायों के चलन के कारण एकरूपता का अभाव परिलक्षित होता है। अर्थात् अंग्रेजी के दो अथवा उससे अधिक शब्दों के लिए हिंदी में एक ही पर्याय का प्रयोग। उदाहरण के लिए, 'President', 'Speaker', 'Head', 'Chief' और 'Chairman' के लिए केवल एक ही शब्द ('अध्यक्ष') को प्रयुक्त करना।

### 14.4.9 तकनीकी शैली के विकास में सहायक

ज्ञान–विज्ञानपरक संकल्पना को व्यक्त करने के लिए प्रचलित भाषा को ही व्यवहार में लाया जाता है, उसकी कोई अलग से अपनी भाषा नहीं होती। इस प्रकार की सामग्री के लेखक को किसी नई अथवा भिन्न भाषा की जरूरत नहीं होती। किंतु दूसरी ओर, वह अभिव्यक्ति के भाषायी स्वरूप और कथ्य में सामंजस्य स्थापित करते हुए चलता है। इसकी अभिव्यक्ति की शैली का सर्वाधिक महत्वपर्ण घटक है – तकनीकी शब्दावली। इन शब्दों में इतनी ढेर सारी जानकारी छिपी होती है कि उसकी व्याख्या करनी पड़े तो वह कई पृष्ठों में उजागर हो पाएगी। जबकि तकनीकी शब्दों के समावेश से वाक्य–विन्यास में कसाव आता है और भाषा परिपक्व प्रतीत होती है।

ज्ञान–विज्ञान के साहित्य लेखन और अनुवाद में एक ही अर्थ को सही–सही उद्घाटित करने वाली ऐसी तकनीकी शब्दावली की आवश्यकता होती है जिसमें हर प्रकार के विचारों–भावों को उद्घाटित करने की पूर्ण क्षमता हो। इसमें वैज्ञानिक–तकनीकी अवधारणाओं और सिद्धांतों की यथातथ्यता की दृष्टि से जरूरी है कि विज्ञान–प्रौद्योगिकीविदों के विचार शब्दावली के माध्यम से पूरी तरह सुस्पष्ट होते हैं। ये शब्द अपने प्रयोग के लिए एक विशेष प्रकार की अभिव्यक्ति–शैली की अपेक्षा करते हैं। विज्ञान की तथ्यपरकता एवं यथार्थमूलकता को बनाए रखने के लिए विज्ञान साहित्य सर्जक प्रसंगहीन और भ्रामक अभिव्यक्तियों से बचते चलते हैं। इससे भाषा के कलेवर में परिपक्वता एवं कसाव आता है, जिसके आधार पर अभिव्यक्ति की विशिष्ट शैली उजागर हो जाती है। इस विशिष्ट तकनीकी शैली से ज्ञान की प्रस्तुति के लिए प्रयुक्त शब्दों का संक्षेपण हो जाता है और भाषा में बानगी आती है। इससे जहाँ भाषा समृद्ध एवं विस्तारशील होती है वहीं उसमें एक विशिष्ट तकनीकी शैली रूप भी विकसित होता है।

## 14.5 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की विकास–प्रक्रिया

पारिभाषिक शब्दावली के रूप में भाषिक विकास पर विचार करने पर एक स्वाभाविक–सा प्रश्न इसकी विकास संबंधी प्रक्रिया के बारे में उभरता है। कहने का अभिप्राय यह है कि किस प्रकिया में से गुजरकर पारिभाषिक शब्दावली का विकास होता है। इसके उत्तर पर विचार करने पर हम पाते हैं कि पारिभाषिक शब्दावली का विकास सहज और नियोजित प्रक्रिया के माध्यम से संभव हो पाता है। इन दोनों प्रक्रियाओं पर विस्तार से विवेचन क्रमशः इस प्रकार से है :

### 14.5.1 सहज विकास प्रक्रिया

पारिभाषिक शब्दावली के विकास की प्रक्रिया का संबंध शब्दों के स्वाभाविक रूप से विकास है। शब्दों का यह प्राकृतिक विकास, विशिष्ट स्थिति के संदर्भ में ही संभव हो पाता है। और वह स्थिति होती है – जब स्रष्टा नवीन संकल्पनाओं से संबंधित मौलिक उद्भावनाओं की प्रस्तुति करता है या नई खोज/आविष्कार करता है तो उसके लिए नए शब्दों अथवा अभिव्यक्तियों को भी गढ़ता है। नई संकल्पनाओं–अभिव्यक्तियों की उद्भावना से जहाँ ज्ञान का संवर्धन होता है वहीं भाषा का भी सहजता–सरलता से विकास होता है। पारिभाषिक शब्दावली के विकास की इस सहज प्रक्रिया को कतिपय विद्वानों ने 'प्राकृतिक विकास' की संज्ञा भी प्रदान की है।

स्पष्ट है कि पारिभाषिक शब्दावली का विकास एक निश्चित प्रक्रिया के द्वारा संपन्न हो पाता है। डॉ. सूरजभान सिंह ने 'अनुवाद शतक' में प्रकाशित लेख 'पारिभाषिक शब्द और अनुवाद प्रक्रिया' में शब्दावली की इस सहज विकास प्रक्रिया को उद्घाटित करते हुए लिखा है कि 'पारिभाषिक शब्दों का विकास उन स्थितियों में होता है जहाँ नई संकल्पनाओं को जन्म देने वाला व्यक्ति ही उनका नामकरण करता है। ये नाम या शब्द लेखों, पुस्तकों और व्याख्यानों के माध्यम से प्रयोक्ताओं तक पहुँचते हैं। कुछ समय तक वे समाज की प्रयोगशाला में एक प्रकार के परिवीक्षा–काल से गुजरते हैं और यदि इस दौरान वे प्रचलन में बने रहें तो उन्हें सामाजिक स्वीकृति मिल जाती है और वे भाषा तथा शब्दकोश के अंग बन जाते हैं। जो शब्द इस दौरान प्रयोग में अपने को जीवित नहीं रख पाते उनका स्वतः लोप हो जाता है।' (पृ.165) पारिभाषिक शब्दावली का सहज विकास,

ज्ञान–विज्ञान के मौलिक चिंतन–सृजन के आधार पर इसी भाँति होता है।

शब्दावली की सहज विकास प्रक्रिया का प्रत्यक्ष प्रमाण है तत्कालीन सोवियत संघ के राष्ट्रपति गोर्बाचोव द्वारा प्रयुक्त 'ग्लास्नोस्त' (glasnost) और 'पेरेस्त्रोइका' (perestroika) पारिभाषिक शब्द, जो अपने विशिष्ट अर्थ–संदर्भ में, संचार माध्यमों के द्वारा विश्व–परिचित हो गए। इनमें से 'ग्लास्नोस्त' का अर्थ–संबंध radical restricting से था यानी साम्यवादी व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन कर देना है और 'पेरेस्त्रोइका' का अर्थ है – open public criticism अर्थात जनता द्वारा उन्मुक्त आलोचना। इसी प्रकार, 'वाका–वाका' और 'वुवुजेला' पारिभाषिक शब्दों को भी देखा जा सकता है। फुटबाल के वर्ष 2010 में अफ्रीका में आयोजित विश्व कप ने इन दोनों शब्दों को अपने पारिभाषिक रूप में प्रचलित कर दिया। 'वाका–वाका' का अर्थ है – 'अब अफ्रीका की बारी' और 'वुवुजेला' अफ्रीका के एक वाद्य यंत्र का नाम है।

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि नवीन संकल्पनाओं और अनुसंधान को अभिव्यंजित करने के लिए लेखन–कार्य में उनके लिए आवश्यक शब्दावली, अभिव्यक्तियों और वाक्य–शैली का विकास उनके सतत व्यवहार से शब्द–रूप आदि क्रमशः प्रबुद्ध एवं सामान्य जन–समुदाय में प्रयोग–सिद्ध होते चलते हैं। प्रयोग बाहुल्य ही इनकी सार्थकता का आधार सिद्ध होता है, जोकि मूलतः सामाजिक स्वीकृति का द्योतक है। तभी वह भाषा–व्यवहार के अनिवार्य एवं अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार्य हो पाता है। पारिभाषिक शब्दों के इस सहज विकास की प्रक्रिया का आरेखीय निरूपण इस प्रकार संभव है :

Ikkfjhkkf"kd 'kCnkoyh dh lgt fodkl çfØ;k

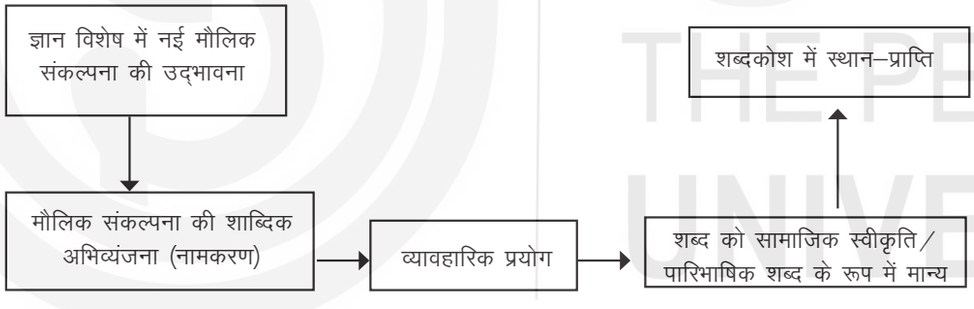


आधुनिक वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी का विकास मुख्यतः पश्चिम में होने के कारण उनकी भाषाओं में तकनीकी शब्दों का भी विकास होता चल रहा है। अंग्रेजी, जापानी, रूसी, जर्मन, फ्रांसीसी आदि भाषाओं में पारिभाषिक शब्द प्रचुरता से उपलब्ध हैं। जिन देशों में ज्ञान–विज्ञान में मौलिक चिंतन–सृजन होता है वहाँ इसी प्रक्रिया के माध्यम से पारिभाषिक शब्दावली भी विकसित होती है।

वैसे, इधर, भारत में भी अनेक नई चीजों और संकल्पनाओं के विकास के साथ–साथ शब्दावली का भी सहज विकास हुआ है क्योंकि इनके लिए अभिव्यक्ति का भी सहजता के साथ यहीं विकास हुआ है। 'ललित निबंध', 'क्षणिका', 'हंसिका', 'सर्वोदय', 'अंत्योदय', 'गोबर गैस' आदि अनेक नवीन पारिभाषिक शब्दों के माध्यम से नई संकल्पनाओं की सहज रूप से अभिव्यक्ति प्रदान की गई है।

### 14.5.2 नियोजित विकास–प्रक्रिया

पारिभाषिक शब्दावली की नियोजित विकास प्रक्रिया, सहज शब्द निर्माण प्रक्रिया से भिन्न है। इसमें पारिभाषिक शब्दों को योजनापूर्वक निर्धारित किया जाता है। पारिभाषिक शब्दावली के विकास में यह स्थिति भाषा–संपर्क की परिस्थिति में आती है। जो भाषा–समाज नई वस्तुओं एवं संकल्पनाओं की उद्‌भावना करने वाले भाषा–समाज मौलिक ज्ञान एवं तत्संबंधी शब्दावली को ग्रहण करता है वह पारिभाषिक शब्दों के निर्माण हेतु नियोजित विकास प्रक्रिया का अवलंब लेकर चलता है। सहज शब्द निर्माण प्रक्रिया में जहाँ नई मौलिक संकल्पनाओं की उद्‌भावना नई शब्दावली को जन्म देती है वहीं नियोजित विकास प्रक्रिया के अंतर्गत अन्य भाषा–समाज में पल्लवित–पुष्पित पारिभाषिक शब्दों के लिए गृहीता भाषा में उपयुक्त समानार्थी शब्दों का विधान करना पड़ता है। इसके लिए अंगीकरण, अनुकूलन, अनुवाद और नव–निर्माण में से किसी न किसी दृष्टि को अपनाकर पारिभाषिक शब्दों का निर्माण संपन्न किया जाता है; उनके कोश, शब्दावलियाँ और शब्द–संग्रह तैयार किए जाते हैं। पारिभाषित शब्दावाली निर्माण संबंधी इन चारों तकनीकों कें बारे में आप इस पाठ्‌यक्रम की अगली इकाई (संख्या–15) के भाग 15.4 में विस्तार से अध्ययन करेगें। इसके बाद, उन निर्धारित प्रतिशब्दों का व्यावहारिक धरातल पर प्रयोग करने–कराने का प्रयास भी किया जाता है ताकि उन्हें सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हो सके। स्वाभाविक है कि शब्दावली निर्माण की यह प्रक्रिया सहज अथवा प्राकृतिक न होकर सायास होती है, किंतु मुख्य उद्‌देश्य यही रहता है कि पारिभाषिक शब्दावली के विकास को सही एवं सार्थक दिशा प्राप्त हो। शब्दावली की नियोजित विकास प्रक्रिया का आरेखीय निरूपण इस प्रकार संभव है :

Ikkfjhkkf"kd 'kCnkoyh dh fu;kftr fodkl çfØ;k

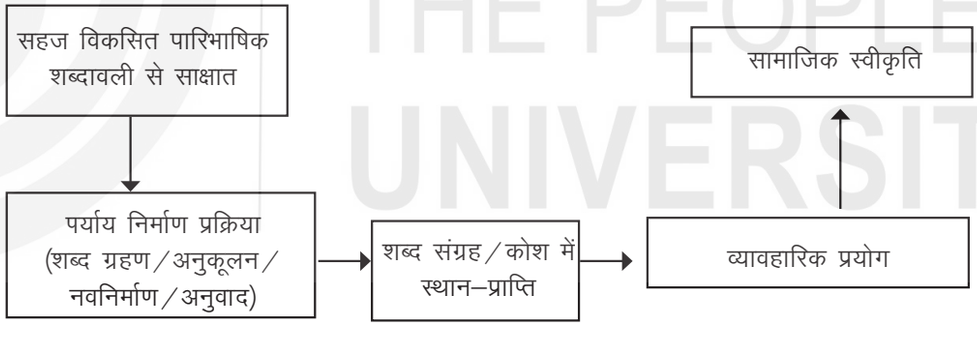


ध्यान देने की बात यह है कि व्यक्तिगत, सामूहिक और संस्थागत स्तर पर किए जाने वाले प्रयासों के कारण पारिभाषिक शब्दावली में अराजकता की स्थिति बन जाती है क्योंकि वे अलग–अलग व्यक्ति/समूह/संस्था के आधार पर अलग–अलग हो सकते हैं। इसलिए पारिभाषिक शब्दावली निर्माण जैसे भाषा–नियोजन के कार्यान्वयन का दायित्व सरकार द्वारा अथवा किसी प्रभुता–संपन्न संस्था द्वारा किया जाता है। भारत में यह कार्य शिक्षा मंत्रालय के शिक्षा विभाग के अंतर्गत 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' (Commission for Scientific and Technical Terminology - CSTT) द्वारा किया जा रहा है।

### 14.5.3 सहज और नियोजित विकास प्रक्रिया में अंतर

अब तक की गई चर्चा से यह संकेत मिलता है कि पारिभाषिक शब्दावली की सहज और नियोजित विकास प्रक्रियाओं में अंतर है। इस अंतर का प्रमुख आधार तो यही है कि सहज विकास प्रक्रिया के अनुसार पारिभाषिक शब्द प्रयोगसिद्ध होते हैं क्योंकि वे भाषा–समाज द्वारा स्वीकृत होने पर उस भाषा में एवं उस भाषा के शब्दकोश का अंग बन जाते हैं। जबकि नियोजित विकास प्रक्रिया, प्रयोग के स्थान पर समानार्थी शब्द के रूप में गृहीता भाषा–समाज में एवं उनके कोशों/शब्द–संग्रहों में स्थान पाते हैं। इस स्थान–प्राप्ति के बाद ही उन शब्दों के प्रयोग के प्रति आग्रह होता है। इस कारण गृहीत पारिभाषिक शब्दावली की प्रयोक्ताओं के बीच में अपरिचित –सी स्थिति बन जाती है। यह विशेष तौर पर तब होता है जब वह पारिभाषिक शब्द गृहीता देश–समाज में सामाजिक व्यवहार में आना शुरू हो जाता है। उदाहरण के लिए, 'रेलवे', 'प्लेटफॉर्म', 'टिकट', 'बस', 'कंप्यूटर', 'कार' आदि असंख्य शब्दों का उल्लेख किया जा सकता है।

'मौलिक सृजन' पारिभाषिक शब्दों के विकास का प्रमुख आधार है, जबकि इसके अभाव या फिर अन्य भाषा–समाज या देश से ज्ञान अर्जित/प्राप्त करने वाले को उसे अपनी भाषा में लाना होता है। इसके लिए अनुवाद का सहारा लेना होता है। किसी भी प्रकार के साहित्य को अपनी भाषा में अनुवाद के माध्यम से प्रस्तुत करते समय मूल में प्रयुक्त शब्दावली का जरूरत के अनुसार, नवनिर्माण, अंगीकरण, अनुकूलन या अनुवाद करके शब्दावलियाँ/शब्द–संग्रह आदि तैयार किए जाते हैं। उसके बाद उनका व्यावहारिक प्रयोग किया जाता है। इसी व्यावहारिक प्रयोग के दौरान ही निर्धारित प्रतिशब्दों की सामाजिक स्वीकृति या अस्वीकृति का पता चलता है। इस प्रकार नियोजित रूप से विकसित हुए पारिभाषिक शब्दों में से कोई तो गृहीता भाषा में रच–पच जाता है, जबकि कुछ कृत्रिमता का अहसास दिलाते हैं या फिर वे कभी–कभी सटीक भी नहीं होते हैं। लेकिन यही शब्द निर्माण प्रक्रिया ही उसके विकास का सकारात्मक या नकारात्मक पक्ष बन जाती है।

## 14.6 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की परंपरा

आधुनिक युग में ज्ञान–विज्ञान के बढ़ते चरणों ने भाषा के सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं वैज्ञानिक रूप को परिवर्तित करके उसे समृद्ध–समुन्नत, व्यापक एवं विस्तारशील बनाया है। विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में पश्चिम जगत में 18वीं शताब्दी में तेजी से हुए विकास के कारण भारी संख्या में तकनीकी शब्द आने शुरू हुए। इसके साथ–साथ समाजशास्त्र, लोक प्रशासन आदि नए–नए विषयों का विकास भी हो रहा था, जिसके साथ–साथ उनकी शब्दावली भी विकसित हो रही थी; नए–नए शब्द गढ़े जा रहे थे या फिर पुराने शब्दों को नए अर्थ–संदर्भ प्राप्त हो रहे थे। किंतु इनके लिए स्पष्टता की जरूरत थी। इसलिए इस युग में यह विचार सामने प्रस्तुत किया गया कि प्रत्येक शब्द का एक ही अर्थ होना चाहिए जो आमतौर पर सभी को स्वीकार्य हो। किंतु यह विचार उस आदर्श की स्थिति से संबंधित था जिसे प्राप्त करना संभव नहीं था क्योंकि शब्द भिन्न–भिन्न अर्थ–संदर्भों में प्रयुक्त होते हैं और उनका संदर्भ बदलने के साथ ही उनकी अर्थछायाएँ भी बदल जाएँगी। इसके समाधान का एक मार्ग था – विशेष शब्दावलियों/तकनीकी शब्दों का विकास।

भारत में पारिभाषिक शब्दावली की परंपरा बहुत प्राचीन है। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व व्याकरण, गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष, नाट्यशास्त्र, योग, न्याय, मीमांसा, दर्शन आदि विभिन्न क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग–प्रचलन की भारतीय परंपरा काफी समृद्ध रही है। इन विषयों की शब्दावली को देश के कोने–कोने तक भली प्रकार से समझा–जाना जाता था। किंतु, इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि आधुनिक वैज्ञानिक शब्दावली संबंधी पारिभाषिक कोश निर्माण का प्रयास भारतीय भाषाओं में नहीं किया गया। इसका मूल कारण यह है कि हमारे यहाँ मौलिक वैज्ञानिक साहित्य लेखन की परंपरा विकसित नहीं हो पाई थी। यदि मौलिक लेखन परंपरा विकसित होती तो पारिभाषिक शब्दावली का भी अपने आप सहज विकास हो जाता। एक अन्य कारण यह भी है कि 19वीं शताब्दी तक यूरोप में विज्ञान से संबंधित जो विकास हुआ था, भारत उससे लगभग अपरिचित था। हालाँकि 16वीं शताब्दी से यूरोपवासियों का भारत में आगमन शुरू हो चुका था, परंतु उनके साथ आधुनिक विज्ञान नहीं आया था। यही कारण है कि न्यूटन, कॉपरनिक्स और डार्विन आदि अनेक वैज्ञानिकों की खोजों–आविष्कारों से हमारा साक्षात बहुत अधिक देर से हुआ।

19वीं शताब्दी से भारत में आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का ज्ञान मुख्यतः पश्चिम से आने के कारण उनसे संबंधित नई तकनीकी संकल्पनाओं के विभिन्न दृष्टिकोणों के आधार पर हिंदी प्रतिशब्द निर्धारण का प्रयास किया जाने लगा। आजादी प्राप्त होने पर यह तो निश्चय किया गया कि देश की उन्नति और विकास के लिए पश्चिम के ज्ञान को ग्रहण कर लिया जाए किंतु तकनीकी शब्दों के मानक स्वरूप की समस्या उभरी क्योंकि शब्दों के मानक होने का यह आशय है कि प्रत्येक व्यक्ति शब्दों के वही अर्थ समझे या ग्रहण करे जिन्हें जिस अर्थ–परिप्रेक्ष्य में लेखकों ने प्रयुक्त किया है। शब्दावली के क्षेत्र में व्यक्तिगत एवं संस्थागत स्तर पर कई प्रकार के प्रयास शुरू हुए। किंतु इन प्रयासों ने शब्दावली के क्षेत्र में अमानकता एवं अराजकता की स्थिति बना दी, जिसे दूर करने और मानक शब्दावली के निर्माण एवं विकास हेतु के लिए अंततः सरकार ने वर्ष 1961 में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की। इस आधार पर शब्दावली निर्माण की इस सुदीर्घ विकास–यात्रा को जिन चरणों में विभाजित करके अवलोकित किया जा सकता है, वे हैं :

क) पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के आरंभिक प्रयास (18वीं शताब्दी पर्यंत)

ख) 19वीं शताब्दी में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण

ग) 1900–1950 के दौरान पारिभाषिक शब्दावली निर्माण

घ) स्वतंत्रता के पश्चात शब्दावली निर्माण के प्रयास

अब इस वर्गीकरण के आलोक में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के विकासक्रम पर विचार करना उपयुक्त होगा।

### 14.6.1 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के आरंभिक प्रयास (18वीं शताब्दी पर्यंत)

हिंदी में वैज्ञानिक शब्दावली निर्माण के प्रारंभिक कार्य पर नजर दौड़ाएँ तो हम पाते हैं कि भारत में शब्दकोश निर्माण की परंपरा अंग्रेजों के हिंदुस्तान में आने से पहले ही शुरू हो गई थी। पारिभाषिक शब्दों को संकलित करने और उन्हें परिभाशित कर अर्थ निर्धारण की शुरुआत वैदिक युग में ही हो गई थी। स्वाभाविक है कि उस समय जो विज्ञान

विषयक ज्ञान उपलब्ध था, उसी की ही पारिभाषिक शब्दावली विकसित हुई होगी। वैसे, इतना तो कहा ही जा सकता है कि आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की शाखाओं–प्रशाखाओं की भाँति उस समय के विज्ञान की अनेक शाखाएँ सुस्पष्ट स्वरूप ग्रहण कर चुकी थीं। यह भी सही है कि ज्ञान–विज्ञान की शरीर–रचना विज्ञान, शरीर–क्रिया विज्ञान, ऋतु विज्ञान तथा गणित आदि शाखाओं–प्रशाखाओं से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण और संकलन 'निरुक्त' की रचना से पहले ही शुरू हो चुका था। जैसे, ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद के अनेक सूत्रों में कई पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हुआ था। वैदिक साहित्य में पारिभाषिक शब्दों की उपलब्धता के संदर्भ में निरुक्तोत्तर पारिभाषिक कोश तथा विशेष तौर पर 'निघंटु' उल्लेखनीय है।

माना जाता है कि हिंदी में वैज्ञानिक शब्दावली का विधिवत निर्माण–कार्य शिवाजी महाराज के शासनकाल (1664–1680) में आरंभ हो गया था। यह परंपरा शिवाजी महाराज की प्रेरणा से रघुनाथ पंत द्वारा 1707 में तैयार किए गए 'राजकोश' से शुरू होती है। उन्होंने प्रशासन, रक्षा एवं खाद्य सामग्री संबंधी पंद्रह सौ शब्दों का एक कोश तैयार किया और इसे विषयवार दस भागों में बाँटा। (वैसे शिवाजी महाराज ने मराठी में 'राज्य–व्यवहार कोश' तथा 'मराठी शब्दों का विश्वकोश' भी तैयार करवाया था।)

डॉ. भोलानाथ तिवारी का कहना है कि 'मध्ययुग में कर्णपूर, दलपतिराय आदि ने भी कुछ कोशों की रचना की थी। इनमें राज–काज में प्रयुक्त होने वाले फारसी शब्दों के लिए पुराने या नव–निर्मित संस्कृत शब्द दिए गए थे। इन कोशों में प्रमुख यवन नाममाला, पारसीक नाममाला, पारसी प्रकाश, पत्र–प्रशस्ति, राज–व्यवहार कोश आदि हैं।' (पृ.131)

### 14.6.2 19वीं शताब्दी में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण

आरंभिक प्रयासों के बावजूद यह कहा जा सकता है कि उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ से भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली निर्माण का काम अपने वास्तविक अर्थों में शुरू हो गया था। यह शब्दावली निर्माण अंग्रेज शासकों की आवश्यकताओं को पूरा करने का परिणाम रहा है। शब्दावली निर्माण की दिशा में आरंभिक प्रयास विदेशी विद्वानों के ही अधिक रहे हैं।

18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में देखें तो वर्ष 1790 में मद्रास से प्रकाशित 'डिक्शनरी ऑफ इंगलिश एंड हिंदुस्तानी' का पता चलता है। यह कोश इंडिया हाउस लाइब्रेरी में उपलब्ध है। कोश का संपादन डॉक्टर हेरिस ने किया। जॉन शेक्सपियर ने अपने व्याकरण की भूमिका में इसका उल्लेख किया है। जॉन गिलक्राइस्ट ने अपना 'अंग्रेजी–हिंदुस्तानी कोश' 1787 में कलकत्ता से प्रकाशित किया था। इसका द्वितीय संस्करण एडिनबरा से वर्ष 1910 में प्रकाशित हुआ था।

वहीं, आरंभिक प्रयास के रूप में हमें सबसे पहले 1797 में प्रकाशित 'Dictionary of Mohammadan Law, Bengal Revenue Terms, Hindoo and Other Words, Used in East Indies, with Applications' (डिक्शनरी ऑफ मोहम्मडन लॉ, बेंगाल रिवेन्यू टर्म्स, हिंदू एंड अदर वर्ड्स, यूज्ड इन ईस्ट इंडीज, विद एप्लीकेशंस) का उल्लेख भी मिलता है। हालाँकि अब तक ज्ञात पारिभाषिक शब्दकोशों में से इसे प्रथम माना जाता है, किंतु यह भी वास्तविकता है कि यह पारिभाषिक कोश लंदन से प्रकाशित हुआ था और इसमें रोमन एवं अरबी लिपियों का प्रयोग किया गया था। इसके अलावा, पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में आरंभिक प्रयासों के अंतर्गत 1809 में अंग्रेजी से हिंदुस्तानी (हिंदी)

में पुस्तकों के अनुवाद हेतु फान्ट्रा नामक अंग्रेज द्वारा इंगलैंड में अनुवाद समिति की स्थापना के अलावा, डॉ. मैक्सीनान (1815), डॉ. गरविस, डॉ. स्प्रिंगर और प्रो. बैट्स द्वारा दिया गया योगदान महत्वपूर्ण है।

1811 में रॉबक नामक अंग्रेज लेखक ने जहाजरानी विषयक नौविज्ञान तकनीकी शब्दावली 'An English and Hindustanee Naval Dictionary of Technical Terms and Sea phrases' (ऐन इंगलिश एंड हिंदुस्तानी नेवल डिक्शनरी ऑफ टेक्निकल टर्म्स एंड सी–फ्रेसेज) प्रकाशित की। कैप्टन रॉबक मद्रास इनफैंट्री के अधिकारी होने के साथ–साथ फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता में हिंदुस्तानी के प्रोफेसर–परीक्षक आदि भी थे। उनके द्वारा तैयार की गई यह तकनीकी शब्दावली, हिंदी में नौवहन से संबंधित संभवतः सबसे पहली शब्दावली थी। इसी कोश का संशोधित एवं परिवर्धित रूप 'A Laskari Dictionary of Anglo-Indian Vocabulary of Nautical Terms and Phrases in English and Hindustani' शीर्षक कोश के रूप में मिलता है। इसे 1882 में डब्ल्यू.एम. ऐलन एंड कंपनी (13, वाटरलू प्लेस, पाल माल, एस.डब्ल्यू.) ने प्रकाशित किया था। इस कोश का संशोधन का कार्य विलियम कैर्मिकल स्मिथ (William Carmichall Smyth) ने किया था और इसके पुनर्संपादन एवं परिवर्धन का कार्य जॉर्ज स्माल (George Small) ने किया।

रॉबक के कोश के ग्यारह वर्षों के बाद 1822 में ब्राउन का भारतीय व्यावसायिक शब्दों का 'ज़िला कोश' (Zila Dictionary) प्रकाशित हुआ था। इसी क्रम में पीटर ब्रेटन के कोश का भी उल्लेख किया जा सकता है। 1850 में अलेक्जेंडर फॉकनर ने 'ए डिक्शनरी ऑफ कमर्शियल टर्म्स विद देअर सिनॉनिम्स इन वैरियस लैंग्वेजिज' प्रकाशित की। इसके तीन वर्ष बाद अर्थात वर्ष 1853 में पैट्रिक कार्नेगी ने 'कचहरी टेक्नीकैलिटीज एंड वोकेबुलरी ऑफ लॉ टर्म्स' प्रकाशित की। इसके दो वर्ष बाद 1855 में ईस्ट इंडिया कंपनी के प्राधिकार से 'ग्लॉसरी ऑफ जुडीशियल रेवेन्यू टर्म्स' प्रकाशित हुई। इसे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत के आचार्य एवं प्रसिद्ध विद्वान प्रो. एच.एच. विल्सन ने तैयार किया था। विल्सन ने इस कोश को वास्तव में 1842 में ईस्ट इंडिया कंपनी के सरकारी कर्मचारियों को उनके दफ्तरी काम में सहायता देने के लिए प्रायोगिक शब्द–संग्रह के रूप में बनाने का प्रयास किया था। केंद्रीय सचिवालय ग्रंथागार में उपलब्ध इसकी प्रति का शीर्षक है – 'ग्लासरी ऑफ इंडियन टर्म्स फॉर यूज़ ऑफ दी वेरियस डिपार्टमेंट्स ऑफ दि गवर्नमेंट ऑफ दि ईस्ट इंडिया कंपनी।'

आगे चलकर, 1858 में एस.डब्ल्यू. फेलन ने 'एन अब्रिज्ड इंग्लिश–हिंदुस्तानी लॉ एंड कमर्शियल डिक्शनरी ऑफ वर्ड्स एंड फ्रेज़िज़ इन सिविल एंड क्रिमिनल रिवेन्यू अफेयर्स' तैयार की, जो कलकत्ता से प्रकाशित हुई थी। इसमें फौजदारी, दीवानी तथा व्यवसाय के अंग्रेजी के शब्दों के प्रतिशब्द उर्दू में हैं, किंतु हिंदी शब्द भी हैं। वैसे, इसमें उर्दू शब्दों की अधिकता है। इस कोश को अंग्रेजों द्वारा किए गए कोश कार्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके बाद फेलन ने 'इंगलिश–हिंदुस्तानी लॉ एंड कमर्शियल डिक्शनरी ऑफ वर्ड्स एंड फ्रेज़िज़ यूज़्ड इन सिविल एंड क्रिमिनल रिवेन्यू एंड कमर्शियल अफेयर्स' (1888) भी प्रकाशित की थी। अंग्रेजों द्वारा कोश निर्माण परंपरा के इस क्रम में विलियम कुक की 'मैटीरियल फॉर अ रूरल एग्रीकल्चरल ग्लॉसरी ऑफ दि नॉर्थ–वस्टर्न प्रोविंसिज़ एंड अवध' शीर्षक से तैयार कृषि शब्दावली का भी उल्लेख किया जा सकता है। यह शब्दावली गवर्नमेंट प्रेस, इलाहाबाद से 1879 में प्रकाशित हुई थी।

भारत में वैज्ञानिक–तकनीकी शब्दावली के निर्माण का व्यवस्थित प्रयास उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में होने लगा था। सर सैय्यद अहमद खाँ द्वारा स्थापित 'साइंटिफिक सोसाइटी ऑफ अलीगढ़' द्वारा रेलवे, कपास उत्पादन तथा कृषि आदि विषयों से संबंधित पुस्तकों के अनुवाद में सरल तकनीकी शब्द शामिल हैं।

### 14.6.3 1900–1950 के दौरान पारिभाषिक शब्दावली निर्माण

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक, अंग्रेजी शासनकाल के दौरान, भारत की शिक्षण संस्थानों में विज्ञान–शिक्षा का प्रचार–प्रसार होने लग गया था। विज्ञान–शिक्षा के इस प्रचार–प्रसार ने इससे संबंधित विभिन्न विषयों की पारिभाषिक शब्दावलियों की जरूरत और माँग को और भी अधिक बढ़ा दिया। भारतीय भाषाओं में पारिभाषिक शब्द निर्माण का सर्वप्रथम व्यवस्थित कार्य 1888 में तत्कालीन बड़ौदा नरेश महाराजा सयाजी राव गायकवाड़ के संरक्षकत्व में तत्कालीन प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रोफेसर त्रिभुवन कल्याणदास गज्जर द्वारा किया गया। प्रो. गज्जर ने गुजराती के क्षेत्र में पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण कार्य शुरू किया, किंतु उनका दृष्टिकोण अखिल भारतीय था। उन्होंने गुजराती की पाँच वैज्ञानिक पुस्तकें प्रकाशित की थीं। इनमें शब्दावली निर्माण संबंधी समस्याओं पर गंभीरता से विचार किया था।

दूसरा प्रयास बंगीय साहित्य परिषद, कलकत्ता तथा बंबई प्रांत द्वारा किया गया। बंगीय साहित्य परिषद ने अंग्रेजी–बांग्ला और बंबई प्रांत ने अंग्रेजी–मराठी से संबंधित पारिभाषिक शब्दकोश तैयार करने की दिशा में कार्य शुरू किया।

हिंदी में वैज्ञानिक शब्दावली निर्माण परंपरा के अंतर्गत संस्थागत प्रयासों के रूप में काशी नागरी प्रचारिणी सभा के प्रयास विशेष तौर पर उल्लेख के अधिकारी हैं। 16 जुलाई 1893 को स्थापित काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने अपनी स्थापना के शुरुआती दौर में ही सात विषयों की पारिभाषिक शब्दावली तैयार करने की दिशा में काम शुरू किया। 1898 में सभा ने हिंदी वैज्ञानिक शब्द संग्रह तैयार करने का निश्चय किया और अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्याय बनाने के लिए एक समिति नियुक्त की। 1898–1906 के बीच काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने बाबू श्यामसुंदरदास, माधव राव सप्रे, महावीर प्रसाद द्विवेदी, सुधाकर द्विवेदी और ठाकुर प्रसाद खत्री के संपादकत्व में तैयार विभिन्न विषयों की शब्दावलियाँ प्रकाशित कीं। इनमें से 1901 में गणित (संपा. श्यामसुंदरदास), 1902 में दर्शन (संपा. महावीर प्रसाद द्विवेदी) और भौतिकी (संपा. ठाकुर प्रसाद खत्री) के कोश प्रकाशित किए।

बाद में, आगे चलकर नागरी प्रचारिणी सभा ने भूगोल, रसायन विज्ञान और अन्य विषयों से संबंधित शब्दावली को भी संकलित–संपादित करते हुए 'हिंदी साइंटिफिक वाकेबुलरी (हिंदी वैज्ञानिक कोश) नामक वैज्ञानिक शब्द संग्रह नाम का एक संपूर्ण कोश (एक जिल्द में) भी प्रकाशित किया। 1898 में शुरू हुआ यह कोश 1906 में पूरा हुआ था। इसे तैयार करने में प्रो. गज्जर जैसे शीर्षस्थ वैज्ञानिकों की सहायता ली गई थी। सभा का यह प्रयास इसलिए भी विशेष महत्व का अधिकारी है कि उसमें शब्दावली निर्माण के लिए कुछ सिद्धांत भी निर्धारित किए थे। सभा ने 1912 में 'व्यापारिक पदार्थ कोश' (संपा. ठाकुर प्रसाद खत्री) भी प्रकाशित किया। इसके अलावा, सभा ने प्रो. प्यारेलाल गर्ग द्वारा तैयार की गई हिंदी की 'कृषि शब्दावली' भी प्रकाशित की। वस्तुतः हिंदी में पारिभाषिक शब्दों के निर्माण के संबंध में यह पहला संगठित प्रयास था।

1909 में पांडे महेशचरण सिंह की पुस्तक 'रसायन शास्त्र' सामने आई। इसमें उन्होंने रसायन विज्ञान विषय के पारिभाषिक शब्दों की सूची भी प्रस्तुत की। 1925 में बनारस से हिंदी विद्युत शब्दावली का प्रकाशन हुआ। गुजरात विद्यापीठ ने 1928 में एक पारिभाषिक शब्दकोश प्रकाशित किया, जो विज्ञान विषयों पर आधारित था।

वर्ष 1930 से 1950 की अवधि के दौरान वैज्ञानिक साहित्य के निर्माण के प्रति लोगों की रुचि में तेजी से वृद्धि हुई। इस दौरान अनेक उल्लेखनीय पारिभाषिक शब्द संग्रह प्रकाशित हुए। 1913 में उत्तर प्रदेश के प्रयाग में स्थापित 'विज्ञान परिषद' ने 1930 में 'वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली' को प्रकाशित किया, जिसका संपादन डॉ. सत्यप्रकाश ने किया था। सुखसंपतराय भंडारी ने 1926 में पारिभाषिक कोशों की एक बृहत योजना पर काम शुरू किया, जो 'The Twentieth Century English-Hindi Dictionary' के नाम से छह खंडों में 1932 में प्रकाशित होकर पूरी हुई।

व्यक्तिगत स्तर पर सबसे पहला व्यवस्थित काम डॉ. रघुवीर का है। उन्हें पारिभाषिक शब्दावली निर्माण का पुरोधा कहा जाता है। उनका यह कार्य 1931 में आरंभ हुआ। लगभग 12 वर्षों के अथक परिश्रम के बाद 1943–46 में डॉ. रघुवीर की 'दि ग्रेट इंडियन डिक्शनरी' (Consolidated Great India Dictionary of Technical Terms) प्रकाशित हुई, जिसे बृहत आकार देकर 1955 में 'कॉम्प्रीहेंसिव इंगलिश–हिंदी डिक्शनरी' (A Comprehensive Engish-Hindi Dictionary) के नाम से पुनःप्रकाशित किया गया। डॉ. रघुवीर का यह कोश अब तक प्रकाशित कोशों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण और सबसे अधिक विवादास्पद तकनीकी शब्दकोश है। उन्होंने ज्ञान को लगभग 600 शाखाओं में विभाजित करके लगभग 2 लाख शब्दों के विशाल पुंज को 1572 पृष्ठों वाले इस शब्दकोश में स्थान प्रदान किया। डॉ. रघुवीर ने अपने इस कोश में 520 धातुओं, 80 प्रत्यय, 20 उपसर्ग और 107 संयुक्त उपसर्ग गिनाए हैं और इनके आधार पर नए–पुराने हिंदी शब्दों का एक विशाल कोशतंत्र खड़ा किया। उन्होंने तकनीकी शब्दों के लिए विशुद्ध रूप से संस्कृत के पर्यायों का निर्माण किया और किसी भी अंग्रेजी शब्द को नहीं स्वीकारा। इसमें कोई संदेह नहीं कि इससे पूर्व, इतने व्यापक स्तर पर शब्दावली संबंधी गहन चिंतन एवं संकलन देखने को नहीं मिलता।

डॉ. रघुवीर की इस धारणा के विपरीत, हैदराबाद के निजाम ने उर्दू के आधार पर तकनीकी शब्दावली का निर्माण करने के लिए एक ब्यूरो की स्थापना की। इसी दौरान, 'हिंदुस्तानी' संप्रदाय के लोगों ने भी पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के क्षेत्र में पदार्पण किया। इस संप्रदाय की यह मान्यता है कि चूँकि हमारी वर्तमान संस्कृति एक मिश्रित संस्कृति है, इसलिए हमारी शब्दावली भी उसी के अनुरूप होनी चाहिए। अर्थात इस शब्दावली का निर्माण संस्कृत के अलावा, अरबी–फारसी–तुर्की, अंग्रेजी एवं हिंदी में प्रयुक्त तद्भव और देशज तत्वों से किया जाना चाहिए। संस्थागत स्तर पर पारिभाषिक शब्दावली के संदर्भ में 'हिंदुस्तानी संप्रदाय' के अंतर्गत इलाहाबाद स्थित हिंदुस्तानी एकेडेमी और उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद का नामोल्लेख किया जाता है।

उस्मानिया विश्वविद्यालय के प्रयास से 1950–52 में एक पारिभाषिक कोश तैयार कराया गया, जिसका नाम है – 'हिंदी टर्म्स ऑफ सोशियोलॉजी'। यह कोश 1952 में प्रकाशित हुआ था। इसमें अंग्रेजी शब्द के समानांतर हिंदी शब्द दो प्रकार के रखे गए थे। पहला प्रतिशब्द हिंदुस्तानी का और दूसरा संस्कृत का। जैसे, 'reaction' के लिए पहला हिंदुस्तानी शब्द 'पलटकारी' और दूसरा संस्कृत पर्याय 'प्रतिक्रिया' रखा गया। इसी प्रकार,

'absolutism' के लिए पहला शब्द 'अरोकवाद' और दूसरा 'निरंकुशवाद' रखा गया। इसी संदर्भ में 'हिंदुस्तानी कल्चर सोसाइटी' द्वारा 1954 में छपी पुस्तिका 'हिंदुस्तानी के लिए शब्दयाती असूल' आदि में हिंदुस्तानीवादी संप्रदाय द्वारा बनाए रख शब्द एवं सिद्धांतों को जाना–समझा जा सकता है।

पारिभाषिक कोश निर्माण कार्य में 1942 में स्थापित 'भारतीय हिंदी परिषद' ने भी अपना योगदान दिया और अंग्रेजी–हिंदी के वैज्ञानिक कोश निर्माण का काम अपने हाथ में लिया। डॉ. सत्यप्रकाश, प्रो. निहालकरण सेठी, प्रो. फूलदेव सहाय वर्मा, महावीर प्रसाद श्रीवास्तव तथा डॉ. ब्रजमोहन प्रभृति विद्वान परिषद के कोशकार रहे। परिषद ने 'अंग्रेजी–हिंदी वैज्ञानिक कोश' नाम से दो खंड प्रकाशित किए। इनमें से खंड–1 वर्ष 1948 में और खंड–2 1950 प्रकाशित हुआ। बाद में यह कार्य अधूरा ही रह गया क्योंकि तब तक केंद्र सरकार ने इस दिशा में बड़े पैमाने पर काम शुरू कर दिया था। भारतीय हिंदी परिषद में प्रो. निहालकरण सेठी और डॉ. ब्रजमोहन ने पारिभाषिक शब्दावली निर्माण का जो कार्य किया था, उसके आधार पर डॉ. सेठी ने 'भौतिकी शब्दावली' और डॉ. ब्रजमोहन का 'गणित कोश' (1954) प्रकाशित कराया। ये कोश प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की ओर से चौखंभा संस्कृत सीरीज, बनारस से प्रकाशित हुए।

इसी प्रकार, 1937–1949 में पोपटलाल गोविंदलाल शाह के संयोजकत्व में 'एन इंग्लिश–गुजराती ग्लॉसरी ऑफ साइंटिफिक वर्क्स इन नागरी स्क्रिप्ट' प्रकाशित हुआ। कलकत्ता (कोलकाता) की एम. भट्टाचार्य एंड कंपनी से 1942 में 'अंग्रेजी–हिंदी चिकित्सा शब्दकोश' प्रकाशित हुआ। और, सन 1948 में यशवंत रामकृष्ण दाते और चिंतामणि गणेश कर्वे का 'शास्त्रीय परिभाषा कोश' प्रकाशित हुआ जो अब तक प्रकाशित वैज्ञानिक हिंदी कोशों में सबसे महत्वपूर्ण था।

हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने 1951 में राहुल सांकृत्यायन और ए.सी. सेनगुप्त के संपादन में 'प्रत्यक्ष शरीर कोश', 1952 में 'जीव रसायन कोश' (डॉ. ब्रजकिशोर मालवीय), 1953 में 'भूतत्व विज्ञान कोश' (एस.सी. सेनगुप्त) और 1955 में 'चिकित्सा विज्ञान कोष' प्रकाशित किए। इसके अलावा, केशव प्रसाद मिश्र कृत 'वैद्युत शब्दावली' भी प्रकाशित हुई। 1956 में ही महेश्वर सिंह सूद का 'जंतुविज्ञान कोश' भी प्रकाशित हुआ। फादर कामिल बुल्के कृत 'ए टेक्नीकल हिंदी ग्लॉसरी' भी सन 1955 में प्रकाशित हुई।

### विज्ञानेतर विषयों संबंधी प्रमुख विषयवार कोष

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के व्यापक ऐतिहासिक विकासक्रम को देखने के पश्चात, अब 1950–51 के दौरान विज्ञानेतर विषयों की पारिभाषिक शब्दावली से संबंधित कुछ विषयवार कोशों की चर्चा करना भी उपयुक्त रहेगा।

i) **शासन संबंधी विशिष्ट कोश :** विज्ञान संबंधी विभिन्न विषयों की पारिभाषिक शब्दावली के अलावा, बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में शासन से संबंधित कोश भी प्रकाशित हुए। उदाहरण के लिए, हरिहर निवास द्विवेदी का 1940 में प्रकाशित 'शासन शब्द–संग्रह', रामचंद्र वर्मा तथा गोपालचंद्र सिंह का 1948 में ही प्रकाशित 'आरक्षिक (पुलिस) शब्दावली', रामचंद्र वर्मा तथा गोपालचंद्र सिंह की ही 1948 में ही प्रकाशित 'स्थानिक परिषद शब्दावली'; और 1946 में हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से 'शासन शब्दकोश' प्रकाशित हुआ जिसे महापंडित राहुल सांकृत्यायन, विद्यानिवास मिश्र और प्रभाकर माचवे ने संपादित किया था। इसमें पार्लियामेंट,

व्यवस्थापिका, सचिवालय, कार्यालय एवं न्यायालय में प्रयुक्त होने वाले 16000 शब्दों का संग्रह किया गया। 1948 में ही गोरखनाथ चौबे का 'राजकीय कोश' इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ था। इसी संदर्भ में डॉ. रघुवीर तथा जी.एस. गुप्ता द्वारा 1949 में नागपुर से प्रकाशित 'आंग्ल–भारतीय प्रशासन शब्दकोश' का भी उल्लेख किया जा सकता है। 1953 में न्याय विभाग, मध्य भारत, ग्वालियर से 'शासन शब्दप्रकाश' भी सामने आया। शासन के रामलोचन शर्मा कंटक द्वारा तैयार किया गया 'पद और पदाधिकारी' शीर्षक कोश भी प्रकाशित हुआ, जो 1954 में पटना से प्रकाशित हुआ था। इन प्रमुख कोशों के अलावा, शासन–प्रशासन से संबंधित कतिपय अन्य कोश भी प्रकाशित हुए।

ii) **सामाजिक विज्ञान और मानविकी संबंधी विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली :** विज्ञान संबंधी विभिन्न विषयों की पारिभाषिक शब्दावली के अलावा, बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में सामाजिक विज्ञान और मानविकी विषयों से संबंधित कोश भी प्रकाशित हुए। उदाहरण के लिए, ब्रजवल्लभ द्वारा संपादित और 1908 में प्रकाशित 'व्यापारिक कोश', भगवानदास केला द्वारा तैयार किया गया और 1927 में प्रकाशित 'राजनीति शब्दावली' और उनके द्वारा ही 1932 में प्रकाशित 'अर्थशास्त्र शब्दावली' उल्लेखनीय है। 1932 में ही गदाधर प्रसाद की 'अर्थशास्त्र शब्दावली' और 1948 के आसपास वर्धा से आचार्य रघुवीर तथा अन्य द्वारा तैयार किया गया 'अर्थशास्त्र शब्दकोश' आया। वहीं, दयाशंकर दुबे के सहयोग से भगवानदास केला ने 1949 में अपनी 'अर्थशास्त्र शब्दावली' का पुनर्प्रकाशन भी किया। इसी प्रकार, रामनारायण मिश्र की 1954 में प्रकाशित 'भूगोल शब्दावली', 1949 में ही कांतानाथ गर्ग का 'वाणिज्य शब्दकोश' तथा 1955 में प्रकाशित डॉ. अमरनाथ कपूर का 'भौगोलिक शब्दकोश और परिभाषाएँ' का भी उल्लेख किया जा सकता है। इसी क्रम में डॉ. सत्यप्रकाश का 1942 में प्रकाशित 'समाचारपत्र शब्दकोश' भी उल्लेखनीय है। इसी परंपरा में प्रभुनारायण गौड़ के 1961 में प्रकाशित 'पुस्तकालय विज्ञान कोश' भी गण्य है।

iii) **विधि संबंधी विशिष्ट कोश :** सामाजिक विज्ञान और मानविकी संबंधी विभिन्न विषयों की पारिभाषिक शब्दावली के अलावा, विधि संबंधी कोश भी प्रकाशित हुए हैं। जैसी कि पहले ही चर्चा की जा चुकी है, 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में जहाँ 1853 में पैट्रिक कार्नेगी ('कचहरी टेक्नीकैलिटीज एंड वोकेबुलरी ऑफ लॉ टर्म्स'), 1855 में प्रो. एच.एच. विल्सन ('ग्लॉसरी ऑफ जुडीशियल रेवेन्यू टर्म्स') और 1858 में एस.डब्ल्यू. फेलन ('इंगलिश–हिंदुस्तानी लॉ एंड कमर्शियल डिक्शनरी ऑफ वर्ड्स एंड फ्रेज़िज़ यूज़्ड इन सिविल एंड क्रिमिनल रिवेन्यू एंड कमर्शियल अफेयर्स') के प्रयास विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं। वहीं, बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में शासन और विधि से संबंधित जो प्रमुख कोश मिलते हैं, वे हैं – पं. ब्रजवल्लभ मिश्र द्वारा तैयार किया गया और अलीगढ़ से 1920 में प्रकाशित 'वल्लभ त्रिभाषिक विधि–कोश', बड़ौदा रियासत द्वारा 1932 में प्रकाशित 'सयाजीराव शासन कल्पतरु', 1938-39 में प्रकाशित श्री परमेश्वरी दयाल श्रीवास्तव की 'श्रीवास्तव लॉ डिक्शनरी' (जिसका परिवर्धित संस्करण उनके पुत्र मध्य प्रदेश के न्यायमूर्ति शिवदयाल ने 1970 में निकाला था), हरिहर निवास द्विवेदी का 1940 में प्रकाशित 'शासन शब्द–संग्रह'; हिंदी सभा, सीतापुर का 1948 में प्रकाशित 'न्यायालय शब्दकोश', 1948 में ही जगदीश शरण अग्रवाल का 'न्यायालय शब्द–संग्रह'; लछमनदास कौशल तथा रंजीत सिंह सरकारिया का 1950 में प्रकाशित 'डिक्शनरी ऑफ लॉ टर्म्स', 1956 में

लखनऊ से प्रकाशित पं. चंद्रशेखर शुक्ल की 'वैधानिक शब्दावली'; और 1958 में लखनऊ से प्रकाशित सुरेंद्रनाथ ठाकुर का 'लॉ लेक्सिकन' आदि। वहीं, लोकसभा सचिवालय द्वारा 1957 में प्रकाशित 'ग्लॉसरी ऑफ पार्लियामेंटरी, लीगल एंड एडमिनिस्ट्रेटिव टर्म्स' का भी उल्लेख किया जा सकता है जिसमें विधि शब्दावली के अलावा, संसद और प्रशासन से जुड़ी प्रशासनिक शब्दावली भी है।

### 14.6.4 स्वतंत्रता के पश्चात शब्दावली निर्माण के प्रयास

हालाँकि यह भी सही है कि आज़ादी के बाद और खास तौर पर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के औपचारिक रूप से स्वरूप ग्रहण करने के बाद से लेकर आज तक पारिभाषिक शब्दावली निर्धारण संबंधी अनेक प्रयास किए गए और किए जा रहे हैं। किंतु, इस विकास–यात्रा का परिदृश्य प्रस्तुत करते समय उन्हें शामिल नहीं किया गया है क्योंकि शब्दावली के निर्माण का औपचारिक रूप से दायित्व वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग का है। भारत के उच्चतम न्यायालय ने भी इसकी पुष्टि की है कि केवल आयोग द्वारा तैयार की गई शब्दावली का ही अखिल भारतीय स्तर पर प्रयोग किया जाए। इसलिए यहाँ सिर्फ आयोग के प्रयासों का ही उल्लेख करना उपयुक्त होगा।

स्वतंत्र भारत के शुरुआती वर्षों के दौरान पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के क्षेत्र में वैयक्तिक, संस्थागत एवं प्रशासनिक स्तरों पर प्रयास किए गए। लेकिन मनमाने दृष्टिकोणों और समन्वय के अभाव के कारण एक ही पारिभाषिक शब्द के अलग–अलग प्रयोग चलन में आ रहे थे। इसने शब्दावली प्रयोग में अराजकता की स्थिति पैदा कर दी। इस परिदृश्य ने सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं की वैज्ञानिक शब्दावली का कोश बनाने की दिशा में सोचने पर मजबूर किया और इससे संबंधित एक बोर्ड के गठन की आवश्यकता को जन्म दिया। 1950 में 'वैज्ञानिक तथा पारिभाषिक शब्दावली मंडल' का गठन किया गया। और समय–समय पर कई बार नाम बदलते रहने के बाद शब्दावली–निर्माण का काम करने वाले 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' की भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत 1 अक्तूबर 1961 को औपचारिक तौर पर स्थापना की गई। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्द निर्माण करने का दायित्व इस विभाग का है। आयोग, तकनीकी शब्दावली के संकलन, निर्माण, समन्वय, प्रशिक्षण आदि के लिए यही अधिकृत और शीर्षस्थ संस्था के रूप में प्रतिष्ठित है।

शुरू में आयोग ने वर्ष 1953 तक गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान और समाज विज्ञान की पाँच शब्दावलियाँ, पुस्तिकाओं के रूप में तैयार की। इसके अलावा, आयोग ने प्रशासन शब्दावली तथा पदनाम शब्दावली का अनंतिम संस्करण तैयार कर 1955 में प्रकाशित किया, जिसे बाद में संशोधित/परिवर्धित करके 1962 में निकाला गया। उसके बाद से अब तक इसके अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। अब यह 'प्रशासनिक शब्दावली' (Glossary of Administrative Terms) के नाम से उपलब्ध है।

इसके अलावा, आयोग ने ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न शाखाओं–प्रशाखाओं से संबंधित अनेक विषयवार शब्दावलियाँ, परिभाषा कोश आदि तैयार करने के काम को व्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ाया और उन्हें प्रकाशित किया। इस दिशा में आयोग ने 1962 में 'A Consolidated Glossary of Technical Terms' नामक अंग्रेजी–हिंदी पारिभाषिक शब्द संग्रह प्रकाशित कराया, जिसमें मानविकी और सामाजिक विज्ञान आदि के पारिभाषिक शब्दों के हिंदी प्रतिशब्द दिए गए।

आयोग ने अनेक विषय–क्षेत्रों के शब्द–संग्रह भी प्रकाशित किए हैं। जनवरी, 1970 तक आयोग ने विभिन्न विषयों की अधिकांश शब्दावलियों के विषयवार निर्माण और प्रकाशन का कार्य कर लिया। तत्पश्चात इन शब्दावलियों को समेकित करके बृहत् शब्द–संग्रहों के रूप में प्रकाशित करने का निर्णय करते हुए आयोग ने 1973 में 'बृहत पारिभाषिक शब्द–संग्रह' (विज्ञान) प्रकाशित किया। इसी प्रकार, विषयों के बृहत् पारिभाषिक शब्द–संग्रह (मानविकी और सामाजिक विज्ञान) को 1973–74 में प्रकाशित किया था। इनके अलावा, आयोग ने ज्ञान–विज्ञान के भिन्न–भिन्न विषयों के पचास से अधिक परिभाषा कोश भी तैयार किए हैं। आज आयोग द्वारा विभिन्न विषय–क्षेत्रों के कई लाख पारिभाषिक शब्द विकसित किए जा चुके हैं। शब्द निर्माण संबंधी यह कार्य आज भी लगातार चल रहा है।

## 14.7 सारांश

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद यह स्पष्ट हो गया होगा पारिभाषिक शब्द सामान्य भाषा–व्यवहार से संबंधित न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित होते हैं। शब्द का विशिष्ट–सुनिश्चित अर्थ में प्रयोग ही उसे पारिभाषिक बना देता है। ये विषय–विशेष में विशिष्ट अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं और उनका यह वैशिष्ट्य ही उनके स्वरूप में भिन्नता ला देता है। अर्थ की स्पष्टता, विषय–सापेक्षता अथवा संकल्पनानुरूपता, अर्थ–रूढ़िता, अर्थ–सूक्ष्मता, अर्थ–भेदकता, प्रयोग में एकरूपता से शब्दावली का मानकीकरण, तकनीकी शैली के विकास में सहायक आदि वे विभिन्न अभिलक्षण हैं, जिन्हें ध्यान में रखकर पारिभाषिक शब्दावली को सही परिप्रेक्ष्य में देखा–समझा जा सकता है। भाषिक संरचना की दृष्टि से हालाँकि सामान्य एवं तकनीकी शब्दों में कोई अंतर नहीं होता है, लेकिन अर्थ–संरचना के स्तर पर दोनों प्रकार के शब्दों में अंतर स्थापित करता है। ये स्वयं में पूर्ण –पारिभाषिक एवं अर्ध–पारिभाषिक स्वरूप वाले होते हैं। इसलिए इन्हें अर्ध–पारिभाषिक और पारिभाषिक शब्द में वर्गीकृत किया जाता है।

पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा को जानने के बाद मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि इनके विकास की प्रक्रिया क्या है? इस इकाई में यह स्पष्ट किया गया है ये सहज और नियोजित प्रक्रिया के द्वारा विकसित होते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि शब्दावली निर्माण का कार्य स्वयं में साध्य (लक्ष्य) न होकर साधन मात्र होता है और जिसका लक्ष्य होता है – निर्मित शब्दावली का व्यवहार–अनुप्रयोग, अभ्यास, प्रशिक्षण एवं परीक्षण। फिर भी, इतना तो अवश्य ही है कि पारिभाषिक शब्दों का भले ही प्राकृतिक प्रक्रिया के माध्यम से विकास हो रहा हो अथवा नियोजित प्रक्रिया द्वारा, किंतु इनका अपना वैशिष्ट्य है। इनसे भाषा का सामाजिक–आर्थिक आदि विभिन्न दृष्टियों से विकास होता है, भाषा समृद्ध होती है। पारिभाषिक शब्दों के निर्माण एवं विकास की प्रक्रिया एक सतत–अनवरत प्रक्रिया है और भाषा में इसकी निरंतरता को बने रहना चाहिए। ज्ञान की विभिन्न शाखाओं–प्रशाखाओं के उदय एवं विज्ञान के बढ़ते चरणों के कारण नई–नई संकल्पनाओं एवं नए–नए शब्दों के आते रहने तथा समानक शब्द निर्माण के कारण यह प्रक्रिया निरंतर बनी रहती है एवं रहनी चाहिए भी। वस्तुतः पारिभाषिक शब्द के निर्माण एवं विकास का अपना राष्ट्रीय महत्व है और यह विकास सहज तथा नियोजित विकास के माध्यम से फलीभूत हो पाता है।

भारत में पारिभाषिक शब्दावली की विकास–यात्रा यह बताती है कि भारत में वैदिक युग से शुरू हुई पारिभाषिक शब्द निर्माण की परंपरा ने एक लंबी यात्रा तय की है।

विभिन्न पड़ावों से होकर गुजरी इस परंपरा में व्यक्तिगत और संस्थागत स्तर पर प्रयास उल्लेखनीय रहे हैं। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना वर्ष तक आते–आते इसने पूरी तरह से सरकारी संरक्षण प्राप्त कर लिया। अब तो स्थिति यह है कि इस संरक्षण पर भारत के उच्चतम न्यायालय ने मोहर भी लगा दी है। शब्द निर्माण की यह परंपरा अबाध गति से निरंतर जारी है; यह शब्दावली निर्माण कार्य आज भी चल रहा है।

## 14.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

1) 'पारिभाषिक शब्द' का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ स्पष्ट कीजिए।

2) पारिभाषिक शब्दों का वर्गीकरण कीजिए।

3) संरचनात्मक स्तर और अर्थ–संरचना के स्तर पर शब्द और पारिभाषिक शब्द में क्या समानता और असमानता है?

4) पारिभाषिक शब्द के प्रमुख अभिलक्षण स्पष्ट कीजिए।

## 14.9 उपयोगी पुस्तकें


- गुप्ता, गार्गी, 1992, पारिभाषिक शब्दावली की विकास–यात्रा, भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली।
- तिवारी, भोलानाथ, 1978, पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ, शब्दकार, दिल्ली।
- कुमार, सुरेश (संपा.), 1997, पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।
- शर्मा, गोपाल, 1968, सामाजिक विज्ञानों की पारिभाषिक शब्दावली का समीक्षात्मक अध्ययन, एस. चंद एंड कंपनी, दिल्ली।
- खेमाणी, आनंद प्रकाश एवं वेदप्रकाश (संपा.), 1964, अनुवाद कला : कुछ विचार, एस.चंद एंड कंपनी, दिल्ली।
- टंडन, पूरनचंद एवं सेठी, हरीश कुमार, 1998, अनुवाद के विविध आयाम, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
- नगेंद्र (संपा.), 1993. अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ एवं गोस्वामी, कृष्ण कुमार (संपा.), 1985. अनुवाद : सिद्धांत और समस्याएँ, आलेख प्रकाशन, दिल्ली।
- झाल्टे, दंगल, 2002. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
- गोदरे, विनोद, 1991. प्रयोजनमूलक हिंदी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।